WWW.NAYIGOONJ.COM

जुलाई 2022

शोध साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट मासिक पत्रिका नई गूँज

Goonjnayi@gmail.com

9785837924

NAYI GOONJ – SHODH , SAHITYA EVAM SANSKRITI (MONTHLY) MAGAZINE

शोध , साहित्य और संस्कृति की मासिक वैब पत्रिका

नयी गूंज-------.

वर्ष 2022

अंक 7

WEBSITE- nayigoonj.com
Email address goonjnayi@gmail.com -
WHATSAPP NO. 91-9785837924

संपादक मंडल

प्रमुख संरक्षक

प्रो. देव माथुर

vishvavishvaaynamah.webs1008@gmail.com

मुख्य संपादक

रीमा माहेश्वरी

shuddhi108.webs@gmail.com

संपादक

शिवा 'स्वयं'

sarvavidhyamagazines@gmail.com

शाखा प्रमुख

ब्रजेश कुमार

aryabrijeshsahu24@gmail.com

परामर्शदाता

कमल जयंथ

jayanth1kamalnaath@gmail.com

संपादकीय

दाल आटा चावल

शिवा 'स्वयं'

हम पाने क़ी चाह में खो रहें हैं, बहुत बड़ा एक छेद है उस पोटली में जिसमें सब संभाल कर रख रहें हैं ! हम सोच रहें हैं जुड़ रहा है असल में घट रहा है !

ये जो छेद है वो अदृश्य है दिखता ही नहीं ! कोई बहुत सामर्थ्यवान ही झाँक कर देखता है कि मैं जो जोड़ रहा हूँ वो संभल रहा है कि नष्ट हो रहा है ! बड़ी उलझी बात लग रही है ! इसे ऐसे समझें कि कुछ भी जो पाना होता है उसकी परवाह भी करनी होती है नहीं तो वो सड़ जाती है, चाहें वो आटा दाल चावल हो या हमारे रिश्ते ! हम हर समझौता कर लेते हैं आगे बढ़ने के लिए ! सच में लगता भी है बहुत कुछ पा लिया लेकिन बिना परवाह किये कुछ भी हो वो सड़ ही जाता है ! इस धरती पर सिवाय माता पिता के स्नेह के कुछ भी ऐसा नहीं जो बिना परवाह किये ज्यों का त्यों रह जाएं ! एक ईश्वर और एक माता पिता हमसे बिना अपेक्षा किये हमेशा एक जैसे रहते हैं बाकि कुछ भी पाने के लिए मूल्य अदा करना पड़ता है !

चाहे कोई रिश्ता हो या सामान बिना परवाह किये संभल नहीं पाते !

कोई भी व्यक्ति खुद क़ो बाहरी रूप से समृद्ध करके, वास्तव में समृद्ध समझने लगता है जबकि वो केवल समानों से समृद्ध गरीब व्यक्ति के सिवाय कुछ नहीं होता !

बहुत गहरी बात है, थोड़ा इतिहास के पन्ने पलटाइये, पढ़िए... कुछ महापुरुषों क़ो पढ़िए ! उन्हें उनके बनाये घर या गाड़ी के कारण नहीं पढ़ा जाता ! उन्हें पढ़ा जाता है उनके भीतर की अमीरी के कारण !

वे छाप छोड़ गए ! उनका जीवन एक उदाहरण बन गया और हम साधारण भी नहीं बन पाये !

आप स्वयं क़ो विचारों से भर कर जिस दिन भरपूर आनंदित महसूस कर सकें वो दिन आप जीवन क़ो समझ चुके होंगे !

फर्क नहीं पड़ता कि आपने कितने महंगे कपड़े पहने हैं लेकिन बहुत फर्क पड़ता है कि आपने कितनी ऊँची बात कही !

परवाह कीजिये दिलों की, परवाह कीजिये अपने दिल की....... ये नहीं कि अब तक....... इतना नहीं कमाया, उतना नहीं कमाया ! वो सब बंट कर इस्तेमाल में आ जायेगा फिर खाली होगा फिर भरना पड़ेगा ! ये तो आर्थिक पूर्ति है करनी ही पड़ेगी लेकिन ये हमें पूर्ण नहीं कर सकती !

हमें पूर्ण तो हमारे पास, हमारे दूर हर अपने की मुस्कान करेंगी !

शुभेच्छा

नयी गूंज------. परिवार

परामर्शदाता-

प्रश्न है कि संस्कृति क्या है। यूं संस्कृति शब्द सम्+कृति से बना है, जिसका अर्थ है अच्छी कृति। अर्थात् संस्कृति वस्तुतः राष्ट्रीय अस्मिता के परिचायक उदात्त तत्वों का नाम है।

भारतीय सन्दर्भ में संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ न होकर समष्टिनिष्ठ होती है। संस्कृति की संरचना एक दिन में न होकर शताब्दियों की साधना का सुपरिणाम होता है। अतः संस्कृति सामासिक-सामाजिक निधि होती है। संस्कृति वैचारिक, मानसिक व भावनात्मक उपलब्धियों का समुच्चय होती है। इसमें धर्म, दर्शन, कला, संगीत आदि का समावेश होता है। इसी की अपरिहार्यता की ओर संकेत करते हुए भर्तृहरि ने लिखा है कि इसके बिना मनुष्य घास न खाने वाला पशु ही होता है-

"साहित्यसंगीतकला-विहीनः

साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।।

मुख्य संपादक

उपनिषद् के शब्दों में कहें तो संस्कृति में जीवन के दो आयाम श्रेय व प्रेय का सामंजस्य होता है। इन्हीं आधार पर आध्यात्मिक, वैचारिक व मानसिक विकास होता है और इन्हीं के आधार पर जीवन-मूल्यों व संस्कारों का निर्धारण होता है और यही जीवन के समग्र उत्थान के सूचक होते हैं। शिक्षा-तंत्र में इन्हीं सांस्कृतिक मूल्यों का शिक्षण-प्रशिक्षण होता है। वर्तमान में शिक्षा-व्यवस्था संस्कृति की अपेक्षा सभ्यता-निष्ठ अधिक है। तात्पर्य है कि वर्तमान शिक्षा विचार-प्रधान, चिन्तन-प्रधान व मूल्यप्रधान की अपेक्षा ज्ञानार्जन-प्रधान है। वस्तुतः इसी का परिणाम है कि सम्प्रति शिक्षा के द्वारा बौद्धिक स्तर में तो अभिवृद्धि हुई है किन्तु संवेदनात्मक या भावनात्मक स्तर घटा है।

संपादक -

हमारी शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों के स्थान पर पश्चिमी सभ्यता-मूलक तत्वों को उपादान के रूप में ग्रहण कर लिया गया है। तभी तो शिक्षा व समृद्धि के पाश्चात्य मानदण्डों को आधार मान लिया है जो संस्कृति-विरोधी हैं, जिनमें नैतिक व मानवीय मूल्यों का विशेष स्थान नहीं है। इसी का परिणाम है कि बुद्धिमान व गरीब नैतिक व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से भी हांसिये पर ही रहता है और नैतिकता-विहीन, संवेदनहीन, भ्रष्टाचारी व अपराधी भी सम्पन्न, सभ्य, सम्मान्य व प्रतिष्ठित होता है। इसी संस्कृति-विहीन व्यवस्था के कारण शोषण-प्रधान पूंजीवादी व्यवस्था ही ग्राहय हो गई है, जिसने रहन-सहन के स्तर को तो उठाया है, पर इस भोगवादी बाजारवादी व्यवस्था के कारण अर्थशास्त्र व तकनीकिविज्ञान के सामने नैतिकता व मानवीयता गौण हो गई है। जबकि राधाकृष्णन व कोठारी आयोग की मान्यता थी कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बन सके। इस दृष्टि से भारतीय प्रकृति और संस्कृति के अनुरूप शिक्षा से ही मूल्यपरक उदात्त-गुणों का संप्रेषण और समग्र व्यक्तित्व का निर्माण सम्भव है। इसमें पुराने व नये का बिना विचार किये जो देश की अस्मिता व समाज के हितकर है, उसी को प्रमुखता देनी चाहिए।

शाखा प्रमुख की कलम से--

प्रिय पाठकों

संस्थान की पत्रिका नयी गूंज के पहले अंक का लोकार्पण एक आंतरिक सुख की अनुभूति करा रहा है।

मुझे प्रसन्नता है कि शाखा प्रमुख *के रूप में कार्यभार संभालने के बाद मुझे आप सभी से नयी गूंज के इस अंक के माध्यम से रूबरू होने का मौका मिल रहा है।*

हम कितना भी विकास कर लें किन्तु यदि समाज में संवेदना ही मर गई तो सब व्यर्थ है। इस संवेदनहीनता के चलते समाज में नकारात्मक ऊर्जा दिन प्रति-दिन बढ़ती जा रही है जो निन्दनीय भी है और विचारणीय भी। आवश्यकता है कि हम अविलम्ब इस दिशा में अपने प्रयास आरम्भ कर दें।

वस्तुतः अपने कर्मों से हम अपने भाग्य को बनाते और बिगाड़ते हैं। यदि गंभीरता से चिंतन-मनन किया जाय तो हमारा कार्य-व्यापार हमारे व्यक्तित्व के अनुसार ही आकार ग्रहण करता है और हमें अपने कर्म के आधार पर ही उसका फल प्राप्त होता है। कर्म सिर्फ शरीर की क्रियाओं से ही संपन्न नहीं होता अपितु मनुष्य के विचारों से एवं भावनाओं से भी कर्म संपन्न होता है। वस्तुतः जीवन-भरण के लिए ही किया गया कर्म ही कर्म नहीं है हम जो आचार-व्यवहार अपने माता-पिता बंधु मित्र और रिश्तेदार के साथ करते हैं वह भी कर्म की श्रेणी में आता है। मसलन हम अपने वातावरण सामाजिक व्यवस्था, पारिवारिक

समीकरणों आदि के प्रति जितना ही संवेदनशील होंगे हमारा व्यक्तित्व उतनी ही उच्चकोटि की श्रेणी में आयेगा।

आज के जटिल और अति संचारी जीवन-वृत्ति के सफल संचालन हेतु सभी का व्यक्तित्व उच्च आदर्शों पर आधारित हो ऐसी मेरी अभिलाषा है।

यह ज़रूरी नहीं है कि हर कोई हर किसी कार्य मे परिपूर्ण हो, परन्तु अपना दायित्व अपनी पूरी कोशिश से निभाना भी देश की सेवा करने के समान ही है। संपूर्ण कर्तव्यनिष्ठा से किया हुआ कार्य आपको अवश्य ही कार्य-समाप्ति की संतुष्टि देगा। कोई भी किया गया कार्य हमारी छाप उस पर अवश्य छोड़ देता है अतएव सदैव अपनी श्रेष्ठतम प्रतिभा से कार्य संपन्न करें। हर छोटी चर्या को और छोटे-से-छोटे से कार्य के हर अंग का आनंद लेकर बढ़ते रहना ही एक अच्छे व्यक्तित्व का उदाहरण है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि नयी गूंज एक उच्च स्तरीय पत्रिका है जिसमें विभिन्न विधाओं में उच्चस्तरीय लेखों का अनूठा संग्रह है

आप सभी पत्रिका का आनन्द लें एवं अपनी प्रतिक्रियायें ऑनलाइन या ऑफलाइन भेजें।

नयी गूंज के माध्यम से हमारा आपका संवाद गतिशील रहेगा। आप सभी अपनी सुन्दर व श्रेष्ठ रचनाओं से नयी गूंज को निरन्तर समृद्ध करते रहेंगे इसी विश्वास के साथ।

अंत में मैं सभी सम्पादक मण्डल के सदस्यों एवं रचनाकारों को नयी गूंज पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए साधुवाद ज्ञापित करता हूं करता हूँ।

आप सभी को हार्दिक बधाई के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद!!

कालिदास ने काव्य के माध्यम से कहा है-

पुराणमित्येव न साधु सर्वं
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते
मूढः परप्रत्ययनेय बुद्धिः।।

अर्थात् पुरानी ही सभी चीजें श्रेष्ठ नहीं होती और न नया सब निन्दनीय होता है। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति परीक्षा करके जो हितकर होता है उसी को ग्रहण करते हैं जबकि मूर्ख दूसरों का ही अन्धानुकरण करते हैं।
अस्तु, निर्विवाद रूप से यह सभी स्वीकार करते हैं कि राष्ट्र की रक्षा, का सकारात्मक पक्ष होता है।

प्रकाशन सामग्री भेजने का पता

ई-मेल:goonjnayi@gmail.com

नयी गूंज इंटरनेट पर उपलब्ध है। www.nayigoonj.com पर क्लिक करें।

नयी गूंज में प्रकाशित लेखादि पर प्रकाशक का कॉपीराइट है

शुल्क दर 40/-

वार्षिक: 400/-

त्रैवार्षिक: उपर्युक्त शुल्क-दर का अग्रिम भुगतान 1200/-

को --द्वारा किया जाना श्रेयस्कर है।

नियम निर्देश

1 रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।

2 लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आँकड़ों से संबंधित आरेख स्पष्ट होने चाहिए। प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।

3 अनुदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान संपादक मंडल प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।

4 प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की ही होगी।

नई गूँज नियमावली

रचनाएं goonjnayi@gmail. Com ई-मेल पते पर भेजी जा सकती हैं। रचनाएं भेजने के लिए नई गूँज के साथ लॉग-इन करें, यह वांछित है।आप हमारे whatsapp no. 9785837924 पर भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं

प्रिय साथियों,

नई गूँज हेतु आपके सहयोग के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद। आशा है कि ये संबंध आगे भी प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेंगे। आगामी अंक हेतु आप सबके सक्रिय सहयोग की पुनः आकांक्षा है। आप सभी से एक महत्वपूर्ण अनुरोध है

कि आप अपने शोध प्रपत्र निम्न प्रारूप के तहत ही प्रस्तुत करें जिससे कि हमें तकनीकी जटिलताओं का सामना न करना पड़े -

1.प्रकाशन हेतु आपकी रचना के मौलिक होने का स्वतः सत्यापन **रचना प्रेषित करते समय "मौलिकता प्रमाण पत्र" पर हस्ताक्षर करना अनिवार्य है। इसके बिना रचना पर विचार करना संभव नहीं होगा**

2. रचना कहीं पर भी पूर्व में प्रकाशित नहीं होनी चाहिए !

3. आपकी रचनाएँ ए**म.एस. ऑफिस** में टाइप होना चाहिए

4. **फोंट** - कृतिदेव **10**, मंगल यूनिकोड

5. रचनाओं के साथ अपना पूर्ण पता, मोबाइल नंबर, ईमेल तथा पासपोर्ट साइज की फोटो लगाना अपेक्षित है !

6. आप लेख, कविता, कहानी, किसी भी विधा में रचनाएँ भेज सकते हैं !

नई गूँज रचनाओं के प्रेषण सम्बंधित नियम व शर्ते :

एक से अधिक रचनायें एक ही वर्ड-डॉक्यूमेंट में भेजें।

रचनायें अपने पंजीकृत पेज पर दिए गए लिंक इस्तेमाल कर प्रेषित करें।

यदि आप हिंदी में टाइप करना नहीं जानते हैं, आप गूगल द्वारा उपलब्ध करवायी गयी लिप्यान्तरण सेवा का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए Google इनपुट उपकरण लिंक पर जाएँ।

स-आभार

संपादक मंडल

Note:- **प्रत्येक रचना लेखक की स्वयं मौलिक तथा लिखित है! इसमें लेखक के स्वयं के विचार हैं तथा कोई त्रुटि होने पर लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा!**

अनुक्रमाणिका

क्रम संख्या	विवरणिका	लेखक	पृष्ठ संख्या
	लेख –		
1	मान की खातिर मर मिटी मर्दानी	डॉ घनश्याम बादल	1 – 3
2	चिंतन का विषय	बृजेश कुमार	4 – 6
3	आजादी के दिन अब कहां है	डॉ शिवा धमेजा	7 – 10
	कविता		
4	देख सजनी देख ऊपर	गिरेंद्र सिंह भदोरिया	11 – 12
5	पनाह / अमीर कलोनियों में	अमरजीत कौके	13 – 16
6	गीतिका	गौरीशंकर वैश्य	17
7	तुम खूबसूरत हो	मुनमुन ढाली	18 – 19
	कहानी		
8	रईस घर की बेटी	मृत्युंजय कोहरी	20 – 23
9	दलाल	रामेश्वर	24 – 27
	गजल		

10	ग़ज़ल	केशव शरण	28 – 31
	लघु कथा		
11	आशीर्वाद के मायने	डॉ शिवा धमेजा	32
12	कहीं तुम्हें मेरी नजर न लग जा	समीर उपाध्याय	33 – 34
	नारी तुम अबला नहीं सबला हो		
13	वीरमाता जीजाबाई		35 – 37
	आलेख –		
14	मणि माला के मध्य मणि – कवि कालिदास	बृजेश कुमार	38 – 41
15	ऐतिहासिक स्थल एक नजर – आमेर दुर्ग (राज.)		42 - 44
	समीक्षा		
16	कहानी संग्रह -महुडी (भारत दोशी)	समीक्षक - अशोक मदहोश	45 – 46
17	डायरी -कुछ भाव कुछ विचार -2	डा. आर. बी. भंडारकर	47 - 49
	साक्षात्कार		
18	साक्षात्कार- डॉ चंचल पाल – वरिष्ठ मनोविज्ञान व्याख्याता		50 - 54

मान की खातिर मर मिटी 'मर्दानी'

डॉ० घनश्याम बादल

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम दुनिया के लिए एक चमत्कार जैसा रहा है। एक बिखरे देश में जहां देशी राजे महाराजे एक दूसरे को नीचा दिखानेमें मशगूल थें , अहं उनके लिए देश से कहीं ज्यादा था। इतना ज्यादा कि कभी गौरी को बुलवाकर विरोधियों को मरवा डाला तो कभी मुगलों को शहंशाह मान लिया , कोई नहीं मिला तो व्यापारी बन कर देश में आए अंग्रेजों के हाथों में ही अपनी लगाम सौंप दी परिणाम भी सामने था। एक - एक कर सबने अपमान सहा व राज्य गंवाएं।

कितने चिराग इस पथ पर बुझे ...

पर जब आजादी की ललक जागी तो वही देश ऐसे एकजुट होकर खड़ा हो गया जैसे वें कभी आपस में लड़े ही न हों ।गांव, शहर जाग उठे और 1857 आते आते क्रांति का बिगुल बज उठा ।मगर स्वाधीनता की सुबह देखने से पहले कितने चिराग इस पथ पर जले बुझे इसका हिसाब भी मुश्किल है। हां, कुछ ऐसे रोशन चिराग हुए जिनके बुझने के बाद भी उनसे देश आज तक रोशनी ले रहा है , जिनके नाम व काम पर हम गर्व कर रहे हैं। ऐसी ही एक मशाल हैं रानी लक्ष्मी बाई।

मनु से बनी लक्ष्मीबाई :

काशी ने स्वाधीनता के यज्ञ में सबसे चमकदार आहुति के रूप में अपने एक छोटे से गांव भदैनी में सन 1835 के 14 नवंबर को छोटी सी बलिका को जन्म दिया जो मां भागीरथी व पिता मोरोपंत तांबे के लिए मणिकर्णिका , परिवार के लिए 'मनु' , तो झांसी के पेशवा वाजीराव व दादा बलवंत राव के लिए 'छबीली' थी। यह नाम उसे गंगा के तट पर अपनी नटखट व चंचल खिलंदड़ी के लिए मिला था।

मुंह बोली 'छबीली':

मनु को मात्र चार वर्ष की उम्र में ही मां की छत्रछाया से वंचित होना पड़ा पर , पिता ने मां व पिता दोनो की भूमिका निबाही। पिता व दादा के साथ अक्सर पेशवा बाजीराव के दरबार में जाने वाली छबीली वहां भी चैन से न बैठती थी और न ही बैठने देती थी अब और कोई होता तो शायद गुस्सैल स्वभाव के पेशवा वाजीराव ही कुपित हो जाते पर ' छबीली' के लिए सब माफ था।

बनी झांसी की रानी:

यह छबीली की प्रतिभा का चमत्कार ही था कि घुड़दौड़ , तलवारबाजी व छद्मयुद्ध में वह अपनी उम्र के लड़को तक को धराशायी कर देती थी , अपने भाईयों व पिता तथा दादा ही नहीं कई बार तो पेशवा तक से

लोहा ले लेती थी । "जो कहना है वह कहना है , जो करना है वह करना है , डरने से बेहतर मरना है ” के सिद्धांत पर चलने वाली मनु 1850 में मात्र 15 वर्ष की आयु में ही झांसी के विधुर राजा राव गंगाधर निम्बालकर की पत्नी बनकर झांसी आ गई यहीं आकर उसे नया नाम मिला रानी लक्ष्मीबाई का ।

दांपत्य सुख के दिन बीते :

लक्ष्मीबाई का दांपत्य जीवन का सुख ज्यादा नहीं चला 1851 में एक पुत्र रत्न को जन्म दिया जो चार माह का होकर चल बसा । पुत्र का वियोग इतना दारुण था कि गंगाधर भी 21 नवंबर 1853 को चल बसे। रानी विधवा हो गई । सुख के दिन बीत गए , राजा विहीन झांसी पर घाघ अंग्रेजों की आंखे गड़ी थीं , राज्य हड़पो नीति के चलते उन्होने रानी के गोद लिए पुत्र दामोदर को भी झांसी का उत्तराधिकारी मानने से मना कर दिया ।

मुकदमे में बहस तो खूब हुई परन्तु....

रानी लक्ष्मीबाई ने ब्रितानी वकील जान लैंग की सलाह से लंदन की अदालत में मुकदमा दायर किया । मुकदमे में बहस तो खूब हुई परन्तु इसे खारिज कर ब्रितानी अधिकारियों ने राज्य का खजाना जब्त कर लिया और उनके पति के कर्ज को रानी के सालाना खर्च में से काटने का आदेश जारी कर दिया। इसके परिणामस्वरूप रानी को झाँसी का किला छोड़ कर झाँसी के रानीमहल में जाना पड़ा।

सुविधाएं नहीं, स्वाभिमान प्यारा :

जब रानी को झांसी के किले से रानी को बलपूर्वक बेदखल कर दिया गया तो वह झांसी के महलों पर काबिज हो गई । रास्ते के कांटे को हटाने के लिए लालच का जाल बुना गया । सुविधाओं व पेंशन का प्रस्ताव आया, पर रानी को सुविधाएं नहीं झांसी , स्वाभिमान व हिन्दुस्तान ज्यादा प्यारा था सो विवाद बढ़ता गया और लाॅर्ड डलहौजी की नीति के तहत झांसी पर हमला कर दिया गया । रानी को झाँसी का किला छोड़ कर झाँसी के रानीमहल में जाना पड़ा। पर लक्ष्मीबाई ने हिम्मत नहीं हारी और हर हाल में झाँसी राज्य की रक्षा करने का निश्चय किया।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो... :

फिरंगियों को पूरी उम्मीद थी कि रानी या उसकी सेनाएं उसकी फौजों का मुकाबला नहीं कर पाएंगी और उसके साम्राज्य में एक और भारतीय राज्य आसानी से समा जाएगा । पर झाँसी 1857 के संग्राम का एक प्रमुख केन्द्र बन गया , वहाँ हिंसा भड़क उठी। लक्ष्मीबाई झाँसी की सुरक्षा को मज़बूत करने में जुट गई और एक सेना का गठन कर लिया। इस सेना में महिलाओं की भर्ती करके उन्हें युद्ध का प्रशिक्षण दिया गया। जनसाधारण ने भी इस संग्राम में सहयोग दिया। लक्ष्मीबाई की हमशक्ल झलकारी बाई को इस सेना में प्रमुख स्थान मिला।

उसे वीरगति पानी थी :

1857 के सितम्बर तथा अक्तूबर में पड़ोसी राज्य ओरछा तथा दतिया के राजाओं ने अंग्रेजो की शह पर झाँसी पर आक्रमण कर दिया। पर जांबाज रानी ने इसे विफल कर दिया। 1858 की जनवरी में ब्रितानी सेना ने झाँसी की ओर बढ़ना शुरू किया और मार्च में झांसी शहर को घेर लिया। दो हफ्तों की लड़ाई के बाद ब्रितानी सेना ने शहर पर कब्जा कर लिया। परन्तु रानी दामोदर राव के साथ बच निकलने में सफल रहीं। वह झाँसी से निकलकर दिन रात घोड़े पर सवार 100 मील दूर कालपी पहुँच , तात्या टोपे से मिली। तात्या टोपे और रानी की संयुक्त सेनाओं ने ग्वालियर के विद्रोही सैनिकों की मदद से ग्वालियर के एक किले पर कब्जा कर लिया। 18 जून 1858 को ग्वालियर के पास कोटा की सराय में ब्रिटिश सेना से लड़ते-लड़ते रानी वीरगति प्राप्त की।

आदर्श वीरांगना :

भारतीय वसुंधरा को गौरवान्वित करने वाली झांसी की रानी वास्तविक अर्थ में आदर्श वीरांगना थीं। लड़ाई की रिपोर्ट में ब्रिटिश जनरल ह्यूरोज ने टिप्पणी की थी कि रानी लक्ष्मीबाई अपनी सुन्दरता, चालाकी और दृढ़ता के लिये उल्लेखनीय तो थी ही, विद्रोही नेताओं में सबसे अधिक खतरनाक भी थी। इस लड़ाई में रानी ने लेफ्टीनेंट वा ॅकर समेत अनेक अंग्रेजों को धूल चटाई । और अजा ादी की लड़ाई में वही स्थान पाया जो वीरों में मंगलपांडे का है । आज भी रानी की घोड़े पर सवार प्रतिमा आज वीरता की प्रतीक है । बेशक इस वीरांगना ने भारत का नाम रोशन किया है ।

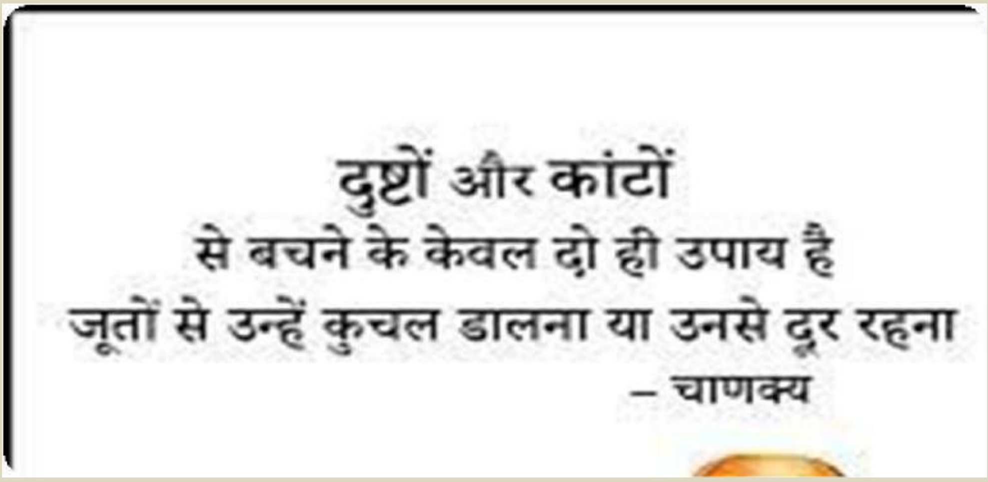

चिंतन का विषय

भारतीय दर्शन में मनुष्य के जीवन मूल्य को समग्र रूप से देखने की परम्परा रही है !यहाँ पर मनुष्य को जीने के लिए आश्रम, वर्ण व्यवस्था तथा चार पुरुषार्थो की व्यवस्था ऋषियों के द्वारा, एक सुन्दर तरीके से सुनियोजित की गई है ! जो मनुष्य के जीवन शैली को मूल्यवान बनाने का कार्य करती है ! तथा मनुष्य को चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का सन्देश देती है ! कहा गया है कि अर्थ और काम भौतिक मूल्य हैं जिससे मनुष्य जीवन की आजीविका तथा समाज के नव निर्माण के लिए आवश्यक हैं ! इसके साथ ही यह दोनों पुरुषार्थ धर्म के अनुकूल हों तब ही मनुष्य जीवन में आध्यात्मिक उनत्ति करता हुआ मोक्ष प्राप्त कर सकता है !

कुछ लोग जीवन को तन ओर मन तक ही सीमित मानते हैं तथा अध्यात्म को अलग कर देते हैं ! जिससे वह मनुष्य जीवन से जीवन मूल्य को संरक्षित करने वाली सीढ़ी अध्यात्म को भूलकर इस सांसारिक जीवन से वंचित हों जाते हैं उनको पता ही नहीं होता कि अध्यात्म मनुष्य के जीवन के लिए बेशकीमती जखीरा है ! जिसके कारण वह अपने मनुष्य जीवन को संस्कारवान् बनाकर संयम, सदाचार, परोपकार, धैर्य, सुख, शांति एवं उत्कर्ष के मार्ग पर आगे बढ़ते रहते है !

महाभारत के रचियता महृषि वेदव्यास ने कहा है **" इस सृष्टि में मानव जीवन से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं "!**

माना जाता है कि देवता तक इस मानव शरीर को धारण करने के लिए तरसते हैं, क्योंकि इसी शरीर से कर्म करते हुए व्यक्ति चेतना के उच्चतम सोपान तक पहुँच सकता है, जो अन्यत्र संभव नहीं !

इतिहास में ज़ब भी जीवन मूल्यों का ह्‌ वास हुआ है तब तब समाज तथा जनमानस कमजोर, प्रताड़ित तथा दिशा हीन हुआ ! चारों तरफ अराजकता तथा निराशा का वातावरण बना ! जो राष्ट्र कभी सोने की चिड़िया तथा विश्व गुरु कहलाता था उस राष्ट्र के लोगों को हज़ारों वर्षों गुलामी में जीवन जीने के लिए विवश होना पड़ा ! ऐसा नहीं है कि हमारे महापुरुषों ने गुलामी काल में भी लोगों को अपने जीवन मूल्यों को समझाने का अथक प्रयास किया है ! लेकिन ज़ब राष्ट्र1947 में आजाद हुआ तब सबने सोचा था कि देश में मूल्यों की नई बहार आएगी ! लेकिन परिणाम कुछ उल्टे ही निकले ! आज भ्रष्टाचार ने शिष्टाचार का रूप ले लिया है तथा कैंसर की भांति राष्ट्र के जीवन को खोख ला कर रहा है ! आज छोटे छोटे प्रलोभनों के लिए लोग अपने जीवन मूल्यों को दाव पर लगाए बैठे हैं ! जो स्वयं में बहुत दुःख एवं चिंता का विषय है लेकिन समझदार लोग इसके प्रति आवाज़ उठारहें हैं जिससे समाज तथा राष्ट्र को इन दीमको से बचाया जा सके !

स्मरण रहे कि मूल्य व्यक्तिगत होते हैं और सामाजिक, राष्ट्रीय भी ! लेकिन इनका आधार व्यक्ति के जीवन मूल्य ही होते हैं जिन्हें आम भाषा में संस्कार कहा जाता है !मनुष्य का समाज तथा राष्ट्र जीवन में शिक्षा तंत्र की एक निर्णायक भूमिका होती है ! क्योंकि देश व समाज का संचालन करने वाली विभूतियाँ इन्हीं शिक्षण संस्थाओं में पठती हैं तथा तराशी जाती हैं। ये शिक्षण संस्थान ही मनुष्य की बौद्धिक तथा भावनात्मक दशा दिशा को तय करते हैं। लेकिन आज इन शिक्षण संस्थाओं में संस्कार विहीन शिक्षा तथा नैतिक मूल्यों का हास केवल और केवल भविष्य में आजीविका कमाने के लिए किया गया व्यवसाय है!

जिससे व्यक्ति छोटी सोच का तथा बौद्धिक चितंन न करने वाला और स्वार्थी ऐसी दुर्बल पीढी तैयार होती है जिसकी सोच केवल और केवल स्वार्थ पूर्ति पर टिकी होती है। ना तो वह राष्ट्र और समाज के बारे में सोच पाती है,ना ही आगे चलकर अच्छा सृजन ही कर पाती है । ये लोग आगे चलकर शिक्षा जगत साहित्य और कला धार्मिक व आध्यात्मिक क्षेत्र या किसी अन्य क्षेत्र में विकृत व विषाक्त सोच के कारण राष्ट्रीय एकता व अखण्डता से खिलवाड करते रहते हैं ।

प्राचीन काल में गुरूकुलों में जीवन मूल्यों का बीजारोपण किया जाता था । तथा समाज व राष्ट्रके लिए व्यक्ति में कूट कूट कर भावनाएं भरी जाती थीं । उसका व्यक्तित्व एक श्रेष्ठ नागरिक के रूप में बाहर आता था ! शिक्षा की आवश्यकता पर बल देते हुए स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो व्यक्ति को अपने पैरो पर खड़ा करना सिखाये ! उसके चरित्र का गठन करती हो , सिंह के समान साहस भरती हो , उसमें परोपकार का भाव विकसित करते हो तथा उसमें सत्य एवं आदर्श के निमित्त बलिदान होने की प्रेरणा भरती हो !

आज फिर से समय की मांग है कि यह देश अपनी गौरवमायी स्थिति को पुनः स्थापित करे, जहाँ पर ऐसी पीढ़ी तैयार हो सके जो समाज, देश, संस्कृति एवं मानवता के प्रति अनुराग से भरी हो ! जिसका यह देश सदा से हक़दार रहा है !

बृजेश कुमार

आज़ादी के दिन अब कहाँ हैं

डा शिवा धमेजा

हम पंछी से ज्यादा कैद हैं अब !

जीवन ने आज़ादी के सही मायने सीखा दिए हैं ! ये बता दिया कि इंसान ने ज़ब अपनी स्वतंत्रता की ताकत से छोटे छोटे परिंदो की उड़ान को लोहे की सलाखों में बंद कर दिया होगा तो उस परिंदे क़ो कैसा लगा होगा ? बिल्कुल वैसे ही आज़ाद हैं हम ! ऐसे आज़ाद कि हर जगह केवल कैद ही हैं !

अपने विचारों क़ो, खुद क़ो अपने ही भीतर समेट कर परतंत्र जीवन जी रहें हैं, वो कर रहें हैं जो सबको अच्छा लगे, वो नहीं जो खुद क़ो अच्छा लगे ! ये कैसी आज़ादी है कि खुद पर ही हक खो बैठे हैं हम ?

दुनिया की चका चौध ने आँखों पर पर्दा लगा दिया है, जिसमें देखकर सब कुछ हरा ही हरा दिखता है ! कुछ साफ नहीं दिखता, जो कुछ सामने हो वो भी नहीं दिखता क्योंकि हम देखते वो हैं जो सोचते हैं, जो सच होता है, जो बिल्कुल आईने की तरह साफ होता है उसे देख कर भी झूठला देतें हैं ! क्योंकि खुद से भागते हैं ! अपनी आँखों से आँखे मिला कर बात करने की हिम्मत नहीं हैं हममें !

हम सब गुलाम हैं, आज़ाद नहीं और ख़ुशी से गुलाम हैं !

रिश्तों के गुलाम, नौकरी में गुलाम, अपने चेहरे पर शोहरत का झूठा नकाब ओढे हुए हम गुलाम!

हमने उस आज़ादी की हवा क़ो अपने भीतर महसूस ही कहाँ किया जिसमें से वतन की मिट्टी की खुश्बू आती थीं ! हमने तो खुद क़ो गुलाम बना दिया, अपनी ही बनाई जंजीरो से !

पढ़ लिख कर कोई अच्छी नौकरी मिल जाने तक ही सारे सपने सीमित कर लिए हमने ! खुद में चाहे आसमान की ऊचाईयों क़ो छू लेने की क्षमता क्यों न हो, पर हम भीड़ के साथ हो लिए ! बहुत कुछ बन सकते थे, कुछ ही बनकर रह गए !

ये कैसी आज़ादी है ?

आप जो हो वैसे ही रह सको, यही तो आज़ादी है ! कोई आपको आपसे ना छीने यही तो आज़ादी है ! जैसे आप हो वैसे ही आपको स्वीकार करें यही तो आपकी आज़ादी है!

अपने जैसा होने का हक तो है ना हमें ! पर नहीं हम सूट बूट में खुद क़ो भले ना पसंद करें, दुनिया की नजर में अच्छे लगें तो पहन लेते हैं ! छोटी सी ये बात कब जीवन की हर बात में शामिल हो जाती है पता ही नहीं चलता ! एक दिन हमें ये याद तक नहीं रहता हमें क्या अच्छा लगता था !

ये आज़ादी नहीं है !

हम यदि आज़ादी के सही मायने समझें तो हर पँख क़ो उड़ान भरने का मौका देना ही आज़ादी पाना औऱ देना है !

आप अपने हौसलों रूपी परों क़ो ना काटें ! ये हौसला ही आसमान की ऊंचाई क़ो छू लेगा एक दिन !

हम सब जानते हैं कि आज बोलने की आज़ादी के नाम पर राष्ट्र, समाज तथा परिवार क़ो तोड़ने का जो षड़यंत्र चल रहा है, यह अपने आप में चिंता का विषय है ! आज संयुक्त परिवारों के स्थान पर एकल परिवार में बंटा हुआ मानव आज़ादी की दुहाई दें रहा है ! पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर हमने नग्नता औऱ फूहड़पन क़ो आज़ादी मान लिया यह कहाँ तक ठीक है ? आज आज़ादी के नाम पर समाज व राष्ट्र में चल रहे कुचक्र से अपने परिवार तथा भावी पीदी क़ो बचाना होगा, समय रहते हुए भारतीय संस्कृति क़ो दूषित करने वाले विज्ञापनो, समाचार पत्रों, सीरियलों तथा पिक्चरों पर प्रतिबन्ध की मांग करनी होगी ! आज इन लोगों ने अश्लील विज्ञापनो औऱ फूहड़ गानों के माध्यम से समाज में जो विकृति की है वह शो चनीय है ! समाज व राष्ट्र के ठेकेदार कुम्भकरणीय नींद में सोये हुए हैं ! उन्हें आज़ादी के नाम पर परोसी गई

अश्लीलता दिखाई नहीं देती ! हमें अपने लोगों क़ो आज़ादी का सही मतलब समझाना होगा ! जिससे हमारी भावी पीदी में संस्कृति औऱ संस्कार का लोप न हो ! राष्ट्र औऱ समाज क़ो उन्नति के पथ पर आगे बढ़ाने वाले लोगों के हौसलों क़ो निरंतर बढ़ाये ! ना कि सही कार्यों में उनके हाथ बांधे ! तभी हम सही अर्थो में आज़ादी के दिन कहाँ हैं के अर्थ क़ो समझ पाएंगे !

देख सजनी देख ऊपर

देख सजनी देख ऊपर।।

इंजनों सी दड़दड़ातीबम सरीखी धड़धड़ाती ,

रेल जैसी जड़बड़ातीफुलझड़ी सी तड़तड़ाती।। ,

पंछियों सी फड़फड़ातीपल्लवों को खड़खड़ाती।,

कड़कड़ाती गड़गड़ातीहड़बड़ाती भड़भड़ाती।। ,पड़पड़ाती ,

बावरी सी बड़बड़ातीशोर करती कड़कड़ाती ,

आ रही है मेघमाला।

देख सजनी देख ऊपर।।

वह पुरन्दर की परी सी घेर अम्बर और अन्दर ।

औरअन्दर कर चुकी है श्यामसुन्दर से स्वयंवर।।

खा चुकन्दर रीक्ष बन्दर सी कलंदर बन मछन्दर ।

हो धुरन्धर खून खंजर छोड़ अंजर और पंजर ।।

कर समुन्दर को दिगम्बर फिर बवण्डर सा उठाती,

आ रही है मेघमाला।

देख सजनी देख ऊपर।।

जाटनी सी कामिनी उद्दामिनी सद्दामिनी सी।
जामुनी सी यामिनी सी चाँदनी पंचाननी सी।।
ओढ़नी में मोरनी सम चोरनी इव चाशनी सी।
जीवनी में घोलती संजीवनी चलती बनी सी।।
तरजनी सी मटकनी कुछ कटखनी बातें बनाती,
आ रही है मेघमाला।
देख सजनी देख ऊपर।।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"

अमीर कालोनियों में

अमरजीत कोके

अमीर कालोनियों में

बच्चे सड़कों पर

गेंद बल्ला नहीं खेलते

औरतें घरों की छतों पर

कपड़े नहीं सुखातीं

नहीं खरीदतीं रेहड़ी वाले से सब्जी

करती नहीं चीज़ों के मोल भाव

अमीर कालोनियों में

दीवारों से

शोर बाहर नहीं आता

कहीं कोई हँसी

न रोने की आवाज़ सुनती है

किसी के लड़नेझगड़ने का ,

पता नहीं चलता कुछ भी

कंकरीट की दीवारें

सब कुछ अपने भीतर

जज़्ब कर लेती हैं

अमीर कालोनियों में लोग

सीले ठंडे कमरों में

रहने के आदी होते हैं

वह टूटते हैं

पहले दुनिया से

फिर परिवार से

फिर बच्चों से

और आखिर अपने आप से भी

टूट जाते हैं लोग

टूट जाते हैं

और खुद को

दीवारों के भीतर

कैद कर लेते हैं

अमीर कालोनियाँ

धीरे धीरे पथराटों में

परिवर्तित हो रही हैं.....

पनाह

पृथ्वी उठाती नहीं जब बोझ मेरा
हवाओं से लुप्त होने लगती जब
मेरे हिस्से की आक्सीजन
शहर के लोग तबदील होते
खूंखार जानवरों में
स्मृतियों का पंजा
मेरी गर्दन पर जब
अपना कसाव बढ़ाता है

मन के इर्द गिर्द
फैलता है जब उदासी का सैलाब
देह की सारी कोशिकाएँ
होने लगती हैं मुर्दा
सूरज डूबने लगता है
जब मेरी आंखों में
घर बाहर
कहीं भी चैन नहीं आता

मेरी रगो में दौड़ने लगते

जब रेतीले चक्रवात

दिन जब

किसी वहशी कसाई की तरह

मुझे धीरे धीरे हलाल करता है

और मेरे मन में तड़पता परिंदा

अनहोनी मौत मरता है

और मरने लगा

दर्द से भरी कोई चीख मारता

खुदकुशी के ख्याल

जब मन की दीवारों से

बारिश के पानी की तरह

टकराते हैं

तभी

ठीक तभी

मैं तुम्हारे जिस्म में

पनाह ढूँढता हूँ......

गीतिका

गौरीशंकर वैश्य

चौपालें सूनी - सूनी हैं।
मन की पीड़ाएँ दूनी हैं।

हाथों में थामे बैसाखी
पर्वत - सीमाएँ छूनी हैं।

सोच - समझकर मिलना होगा
मित्रों की चालें खूनी हैं।

काम पड़े तो साथ न देते
लोग बहुत ही कानूनी हैं।

आस्थाओं में भटक न जाना
जगहजगह जलती धूनी हैं।-

कोई बात नहीं सुनता है,
कहतेबाबा बातूनी हैं। ,

बेच रहापर एक न ग्राहक ,
मूँगफली ताजा भूनी हैं।

तुम खूबसूरत हो

हां हो तुम बहुत खूबसूरत हो !

किसी के कहने का इंतजार क्यों ?

काम करतेकरते आंचल से अपना मुँह पोछ लेती हो साड़ी भींग ना जाए -

यह सोच चुन्नट को टेढ़ा कर कमर में खोस लेती हो

बालों का बारबार चेहरे पर गिरना-

तंग आकर क्लिप से पूरे बालों का जुड़ा बना लेना

हल्दी से तेरी उंगलियों का पीला होना

प्याज लहसुन की महक से नहाना

काम के बीच आईने में झांकना

फिर

बुदबुदाना !!!! कैसी लग रही हूं मैं !उफ़्फ़फ़,

फिर खुद को थोड़ा सवार कर ,

एक सेल्फी लेना

थोड़ी देर देख कर ,

मुंह बना कर डिलीट कर देना

आईने से नजर चुराना

आंखों के काले घेरे

बालों की सफेदी

वो झुर्रियां

वो बदन का आकार

तुम्हें और खूबसूरत बनाता है

महको चहको

तेरी उम्र तेरे घर को जन्नत बनाने का जज़्बा अतुलनीय ,तेरा तजुर्बा, है

तुम जमीन कि नहीं

आसमान से उतरी हो

यकीन मानो

तुम बला की खूबसूरत हो

मुनमुन ढाली

रईस घर की बेटी

डॉ0 मृत्युंजय कोईरी

अमित गणित से बी0एसी0 पास है। पंचायत में एक हाईस्कूल खुला। षिक्षा विभाग की ओर से हिन्दी और संस्कृत विषय के दो सरकारी षिक्षक को भेजा गया। दो-ढाई सौ विद्यार्थी ने नामांकन करा लिया। प्रखंड में एक मात्र एस0 एस0 हाईस्कूल था, जो आठ किलोमीटर दूर है। सौ-डेढ़ सौ लड़कियाँ अपनी पढ़ाई छोड़ देती थी। दो षिक्षक और विद्यार्थी की संख्या अधिक देखते हुए मुखिया ने पंचायत सदस्य और षिक्षक के बीच बैठक बुलाई। जिसमें निर्णय लिया। जब तक गणित, अंग्रेजी और समाजिक विज्ञान के सरकारी षिक्षक नहीं आ जाते। तब तक हर विद्यार्थी से पन्द्रह-पन्द्रह रुपया लेकर इन विषयों के षिक्षक की नियुक्त की जाए। और प्रत्येक षिक्षक को हर विद्यार्थी का पाँच-पाँच रुपया दिया जायेगा। सर्वसहमति से गणित विषय के लिए अमित का और अन्य दो षिक्षक का सेलेक्षन किया गया।

अगले सत्र से ए, बी और सी ग्रुप में कक्षा संचालित होने लगी। अमित हाईस्कूल के सामने ही नौवीं-दसवीं का कोंचिग खोला। अब पिता के साथ षादी-ब्याह, मरी-मरखी में नाई का काम करने नहीं जाना होगा। यह सोचकर बहुत खुष है। इससे पहले जब भी पिता के साथ नाई का काम करने जाता। कोई कहता, ‘‘ज़रा देखो न! नाक का बाल नहीं काटा है, दायें वाला कलम छोटा कर दिया, कैसे काटते हो! धीरे-धीरे काटना तब न! तुम बहुत दर्द कराता है ....।’ ’ अमित तंग होकर पहले ही भाग जाता था।

अमित तरह-तरह का सपना देखने लगा, ‘‘कभी रईस घर की बेटी के साथ उनकी कार पर बैठकर घूमने जाता, जुगली पॉर्क में फोटो षूट करता, दषम फल में पिकनिक मानाता, सिनेमा घर के बाहर चाइनीज़ खाना खाता.......। कभी दहेज के पैसों से दो-तल्ला घर बना लेता और लिफ़्ट से उतरता।’ ’

दस साल पूर्व ही माँ की मृत्यु हुई थी। पिता अमित की षादी कर देने के फ़िराक़ में हैं। अमित का दोस्त कमला एक दिन अमित को लड़की दिखाने ले जाता है। खपरैल का घर देख दूर से ही लौट आया। उस दिन कमला ने बहुत समझाया, ‘‘देखो मित्र! आपको मैं अपना अनुभव का एक किस्सा सुनाता हूँ। आप ही की तरह एक लड़का था। वह गाँव की सारी औरतों से सुन्दर लड़की से षादी करने की ठान ली थी। सौ से ज्यादा लड़कियाँ देखी। लेकिन किसी को पसंद नहीं किया। अंत में एक रूपवती लड़की को पसंद किया। जिसकी उम्र मुष्किल से तेरह बरस होगी। षादी के तीन महीने के बाद से उनकी पत्नी पड़ोस के तीन पुत्र के बाप से इष्क

लड़ाने लगी। इस बात की खबर से वह लड़का तिलमिला गया। और पत्नी के साथ मारपीट भी की। न जाने खाना के साथ क्या दे थी? चार दिन के बाद वह लड़का पागल सी हरकत करने लगा..................।' '

' 'क्या यार तुम भी? रईस घर की बेटी से षादी करने का अलग ही मज़ा है। साथ घूमने-फिरने का अलग ही आनंद है। मैं, भी रईस में कम नहीं हूँ। भले स्थायी न सही, लेकिन हाईस्कूल का षिक्षक बन गया हूँ। मेरा कोंचिग है। महीना बीस-तीस हजार मेरी कमाई है। दिन-भर होटल में खाना खाता हूँ। सुबह नास्ता में केला, सेव और कचौड़ी के साथ दो अंडे, दोपहर को चावल के साथ सप्ताह में तीन दिन मीट, कोचिंग से निकलकर चाऊमीन, पुचका, चाट ...... और रात को रोटी के साथ दो सरगुल्ले आदि। मैं, अब बिल्कुल रईसी जिंदगी जीने लगा हूँ। मध्यवर्गीय परिवार में षादी करके साग़-सब्ज़ी में फंसना नहीं चाहता हूँ ....।' '

अमित के अलावे पड़ोसी ने भी समझाया। लेकिन किसी की बात सुनने को तैयार नहीं। आखिर एक रईस घर की बेटी ममता से षादी फ़िक्स हो गयी। ममता साँवली है। कोई रईस घर का लड़का पसंद नहीं करता था। इसलिए ममता के पिता ने गाँव के चंद पैसांे से रईस बना फिरता अमित से षादी फ़िक्स की। अमित से ममता दो साल की बड़ी है। लड़की के पिता ने दहेज के रूप में सात लाख कैष और अन्य सामान भी खरीद दिये। अमित षादी से पहले अध बना मकान को पूरा किया। घर में संगमरमर का टाइल और यहाँ-वहाँ नल लगा लिया। ताकि पत्नी को हाथ-मुँह धोने के लिए एक कमरे से दूसरे कमरे में न जाना हो। दहेज का आधा से अधिक पैसा घर ठीक करने में लगा दिया। बाकी पैसा षादी में खर्च की।

ममता सुबह-षाम रोटी बनाती। अमित तो खा लेता, पर उनके पिता बासी भात खाने वाला है। जब से अमित घर में खाना नहीं खाने लगा था। तब से रात का खाना दोपहर और दोपहर का सुबह खाते थे। जिस दिन पिता मसालेदार सब्ज़ी के साथ रोटी खा लेते। उस दिन पेट में दर्द होने लगता। पेट गैस से फुल कर कोंहड़ा बन जाता। जब पतोहू से दोपहर का खाना ही रख देने को कहते। तब पतोहू की ओर से उत्तर मिलता, ''कुत्ते हैं क्या? जो दोपहर का खाना अगले दिन सुबह को खायेंगे। आपलोग कैसे आदमी हैं? जानवर जैसा खाते हैं। वह भी आधा किलो चावल का भात एक ही बार में ठूँस लेते हैं........।' '

' 'बहू! आप मुझे बासी खाना खाने से माना कर रही हैं, तो मेरे लिए रोटी की जगह भात ही बना देना।' '

' 'नहीं, नहीं.... मैं आपकी सेवा-सुश्रूषा करने नहीं आयी हूँ। मैं जो दे रही हूँ, उसे खाने की आदत डाल लीजिए! वरना.....''

पिता क्या खा रहे हैं या नहीं? उसकी चिंता अमित को पहले भी नहीं थी और अब भी नहीं। पत्नी के साथ षाम के समय चाट-चाऊमीन खाने निकलता। पिता मजदूरी करने जाने लगे। वहीं खाना भी खा लेते। जब काम पर नहीं जाते, तब पड़ोसी के घर मांगकर खा लेते। क्योंकि रईस घर की बेटी से बोल कर थक चुके थे। जिससे लड़ नहीं सकते। इसी तरह दो वर्ष गुजर गये। पर बाल-बच्चा का कोई संकेत नहीं मिला। तभी अमित

अनुमंडल के स्त्री रोग विषेषज्ञ श्रीमती अंषु वर्मा से पत्नी को दिखाने ले जाता है। जाँच-उँच करने के बाद दवा लिखती हुए बोली, ‘‘मैं अभी कुछ दवाइयाँ लिख देती हूँ। और कुछ चेकअप है, उसे कराने के बाद अगले सप्ताह मिलने आ जाइएगा! और कुछ?’’

‘ ‘ओके मैम।’ ’ कहते दोनों निकल गये।

अगले सप्ताह जब सारे चेकअप की रिपोर्ट लेकर गये, तब श्रीमती अंषु वर्मा ने रिपोर्ट देखकर बोली, ‘‘ममता! आपकी बच्चादानी में चरबी का परत बना हुआ है। मैं एक माह की दवाइयाँ लिख रही हूँ। खाने के बाद अल्ट्रासाउंड कराके आना। ठीक है?’’

‘ ‘मैम! यदि दवा से काम नहीं करे, तो फिर क्या करना होगा?’’ अमित ने धीरे से पूछा

‘ ‘दवा से काम नहीं हो तो फिर ऑपरेषन करके निकालना होगा।’ ’

‘ ‘लेकिन ऑपरेषन के बाद ममता माँ बन सकेगी न?’’

‘ ‘देखिए अमित जी! आप भी एक षिक्षक हैं। आपलोग दो-ढाई सौ बच्चों को पढ़ाते हैं। अपलोगों की कोषिष रहती है कि सब विद्यार्थी पास हों। लेकिन दो-चार बच्चे फेल हो ही जाते हैं। उसी तरह हमारी भी कोषिष रहती है कि हर मरीज को ठीक कर सके। इसी उद्देष्य से ऑपरेषन करते हैं। फिर भी एक-दो मरीज को ठीक नहीं कर सकते हैं।’ ’

‘ ‘हाँ! वह तो है।’ ’ कहता अमित चेयर से उठा और निकल जाता है।

एक माह के बाद पुनः अल्ट्रासाउंड कराके पति-पत्नी श्रीमती अंषु वर्मा के क्लिनिक पहुँचे। अंषु वर्मा ने रिपोर्ट देखकर सीधे ऑपरेषन कराने की सलाह दी। अमित मैडम की बात मानकर ऑपरेषन के वास्ते हाँ कर दिया। ऑपरेषन का सारा ख़र्च उठाया। ऑपरेषन के साल भर गुजर जाने के बाद भी ममता न माँ बनी और न कुछ संकेत ही मिला। यहाँ-वहाँ वैद्य और ओझा-गुनी के पास भी जाकर हार गया। दोनों के बीच छोटी-छोटी बातों को लेकर कहासुनी होने लगी। इधर अस्पताल और वैद्य-ओझा के कारण कोचिंग बराबर बंद रहने लगा। हाईस्कूल में खैरियत है कि किसी ने टोका-टोकी नहीं की। पर कोचिंग के अस्सी प्रतिषत विद्यार्थी ‘नवीन कोचिंग’ चले गये। धीरे-धीरे सारे विद्यार्थी अमित का कोचिंग आना छोड़ देते हैं। दो महीने के बाद हाईस्कूल में गणित के सरकारी षिक्षक भी आ गये। कोचिंग भी बंद और हाईस्कूल भी छोड़ना पड़ा।

अमित आर्थिक संकट से गुजरने लगा। घर में छोटे-छोटे बच्चों को पढ़ाने लगा। साथ ही एक-दो खेत में धान की खेती के अलावे सब्ज़ी भी उगाने लगा। पत्नी सौ गालियाँ देने के बाद चूल्हा में खाना बनाती। एक दिन पैसों को लेकर कहासुनी होने लगी, तभी ममता क्रोधित होकर बोली, ‘‘मेरे पापा ने मिट्टी के चूल्हा में खाना बनाकर तुम्हें खिलाने के लिए षादी नहीं दी थी। बल्कि बाहर के चटपटेदार खाना मांगा कर खाने और एक-

आध बार घर में खाना बनाकर। वह भी गैस सेे! तेरे साथ मैं तंग आ गयी हूँ। ये सूखी रोटी खा-खाकर। अब मैं मायके जा रही हूँ।’ ’

‘ ‘जा,जा.... तुमको जहाँ जाना है। मुझे भी नहीं रहना बाँझ के साथ।’ ’

‘ ‘मुझे बाँझ कहा? मैं तुमको नहीं छोड़ूँगी......।’ ’

‘ ‘अरे जा, जा.......।’ ’

ममता मायके चली जाती है। अमित अब घर का न घाट का रह गया था। पिता खाना बनाकर मजदूरी करने चले जाते। अमित सुबह ही खेत चला जाता है। एक दिन खेत की सिंचाई कर रहा और बिजली चली जाती है। कुआँ के सामने बैठा ममता को फोन करके आने का आग्रह किया। वह साफ माना कर दी, ‘‘तेरे जैसे गरीब मर्द के घर में रहने से तो अच्छा है कि मायके में ही मर जाऊँ या किसी रईस लंडे के साथ भाग जाऊँ।’ ’

यह वाक्य सुनकर अमित का सिर चक्कराया और कुआँ में गिरा या क्रोध में आकर कूद गया। यह कहना असंभव है? लेकिन देर रात अमित के घर नहीं आने पर पिता जहाँ-तहाँ खोजने लगे। सुबह कुआँ में लाष के मिलते ही गाँव वाले ने पुलिस को ख़बर की। पुलिस लाष को पोस्टमॉर्टम के लिए रिम्स भेज दी। जब पोस्टमॉर्टम की रिपोर्ट आयी, तब पता चला कि अमित की मौत हार्ट अटैक से हुई थी। क्योंकि पुलिस के सामने कुआँ से लाष को निकाला गया था। उस समय पेट फूला हुआ नहीं था। केवल मुँह एक ओर मुड़ गया था। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में लिखा है, ‘‘अमित की मौत हार्ट अटैक से हुई है। न कि कुआँ में गिरकर पानी पीने से। क्योंकि पेट से लीटर भर भी पानी नहीं निकला।’ ’

पति की मृत्यु की ख़बर सुनते ही ममता अपने भाई और अन्य रिष्तेदार के साथ आयी। ष्मषान से लाष को जला कर आये। और ममता ने आधी ज़मीन का कागज़ात ससुर से जबरन मांगकर फुर्र.....।

दलाल

रामेश्वर महादेव

विश्वजीत ":कल्याण पढ़ाई महत्वपूर्ण है जिंदगी में।"

कल्याण ":हांविश्वजीत तुम्हारा। लेकिन परिस्थिति पढ़ाई करने जैसी नहीं है। थोड़ी सही है ... "बुरा समझने इतनी। व्यवसाय करने जितनी।,पढ़ाई हुई है अच्छा

विश्वजीत" :स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद तू स्पर्धा परीक्षा की तयारी करके अच्छा पद हासिल कर सकता है।"

कल्याण" :विश्वजीत मुझे व्यवसाय में रुचि हैं।"

विश्वजीत" :कौन"सा व्यवसाय करेगा।-

कल्याण":तुम्हारे मन में है कोई कल्पना हो तो बता दो।"

विश्वजीत":तुझे जो अच्छा लगे वही कर। लेकिन व्यवसाय की शुरुआत कम पैसों से कर।"

कल्याण" :मेरे पास पैसे नहीं हैं ज़्यादा। परिवार में बड़ा मैं ही हूं। मांबाप की जिम्मेदारी मेरे , "कंधों पर हैं। जमीन भी नहीं है मुझे। लेकिन मुझे ज़िन्दगी में बदलाव करना है।

विश्वजीत" :व्यवसाय की शुरुआत कैसे करेंगा"?

कल्याण" :फाइनेंस करके रिक्शा लेना चाहता हूं।"

विश्वजीत" :अच्छा हैफाइनेंस के कर्मचारी रिक्शा नहीं तो ,लेकिन हप्ता समय पर भरना होगा , "समझकर निर्णय ले।-लेकर जाएंगे। सोच

कल्याण" :हां"...

रिक्शा लियाठ-व्यवसाय की अच्छी शुरुआत हुई। सब ठीक ,ाक चल रहा थाज़िन्दगी अच्छी , वे नजद्रीक दिख रहें थे। लेकिन कुछ ही दिनों में समस्या से ,गुज़र रही थी।जो सपने देखे थे ... करें समझ में नहीं आ रहा था। उसी समय फोनसामना हुआ। क्यां

"? है-कौन ...हॅलो"

"पहचाना नहीं।"

लेकिन नाम याद ,पहचान की है ,आवाज तो सुनी हुई है“ नहीं आ रहा।“

“मैं हूं विश्वजीत।तुम्हारा मित्र।“

“।...पहचाना। बहुत दिनों बाद फोन ...अच्छा“

“नहीं कर पाया। कैसे चल रहा है रिक्शा तुम्हारा। काम की व्यस्तता की वजह से ...हां“

“।...जो हैं अच्छा है“

”? पैसों की जरूरत है क्या तुम्हे ,परेशानी में हो ? क्या हुआ“

“पैसों की जरूरत नहीं। लेकिन मानसिक परिशानी में हूं।“

”?क्या हुआ“

“जो होना है वह हो रहा है।,बताकर क्यां फायदा,जाने दो भाई“

यह गलत है तेरा कहना कि दुख बताने से मन का बोझ हल्का होता :ख बताकर क्या फायदा।दु: हैं। नए रास्तें निकल सकते हैं।

विश्वजीत व्यवस्था बहु“त बुरी ओर भ्रष्टाचारी हैं। हर गरीब का शोषण कई माध्यम से करती हैं।“

“मैं नहीं समझा। ?कैसे“

मेरा ही उदाहरण लोफाइनेंस निकालकर। कुछ दिनों बाद कोरोना महामारी के मैंने रिक्शा लिया , कारण वश ला ॅकडाऊन पड़ा। बहुत दिन घर के बाहर निकलना मुश्किल था। एक साल बाद चंद घंट ो की मुद्दत मिली। रिक्शा चलने लगा। थोड़ा पैसा मिलने लगा। घर का खर्चारिक्शा का , से पैसे वसूल करने लगे। हप्ता इसी में था। उसी समय ट्रैफिक पुलिस हर गाड़ी

”? नहीं दिए तो“

कुछ भी कारण बताकर दो हजार रुपये की फाईन बिठाते थे। गाड़ी पुलिस स्टेशन लेकर जाते थे “ और द ुसरे दिन कोर्ट में तारीख। इसमें बहुत पैसा खर्च होता था और दुश्मनी भी। इस लिए उन्हें पैसा देते थे।“

नहीं दर्ज़ उनके खिलाफ़ शिकायत क्यों“

करते।“

किनसभी की मिली भगत हैं। सब मिल बाटकर खाते हैं ऊपर से ...किन पर शिकायत दर्ज़ करें-लेकर नीचे तक। सौ में से एखाद अधिकारी ईमानदार है उन्हें भी भ्रष्टाचारी बनने के लिए मज़बूर किया जाता है। वह भ्रष्टाचार में शामिल नहीं हुआ तो उनके साथ षड़यंत्र रचाकर उन्हें बदनाम किया जाता है। तबादला भी। बहुत से अधिकारी दलाल हैं दलाल!...

तुझे इन भ्रष्ट व्यवस्था के ...हिम्मत मत हार कल्याण" खिलाफ़ लढ़ना होगा। आवाज उठाना होगा। तेरी हार याने सब गरीब रिक्शा वालों की हार हैं।"

मैं बहुत परेशान हूंहप्ता तो दूसरी तरफ़ शहरी और ग्रामीण पुलिस एक तरफ़ फाइनेंस का , स्टेशन का हप्ता। एखाद समय फाइनेंस का हप्ता रूका तो चल सकता है लेकिन ट्रैफिक पुलिस का नहीं।

"मुझे कुछ समझ नहीं आया। ,ग्रामीण और शहरी पुलिस स्टेशन का हप्ता यानी"

मैं गांव से पैसेंजर शहर लेकर जाता हूं ओर शहर से पैसेंजर गांव लेकर आता हूं। गांव का अलग ग्रामीण पुलिस स्टेशन है ओर शहर का अलग शहरी पुलिस स्टेशन।इस कारणवश मुझे दोन्हो पुलिस स्टेशन को हप्ता देना पड़ता हैं।

"।...कानून के खिलाफ़ भी ,यह गलत है"

कानून सिर्फ़ गरीब के लिए है अमीर लोगों के लिए नहीं। हमारे साथ कुछ बड़े लोग हैं गाड़ी चलाने वाले।उनकी विधायकसांसद से जान पहचान है इस कारण उन्हें हप्ता नहीं होता। हप्ता , !...सिर्फ़ सामान्य लोगों के लिए

"ट्रैफिक पुलिस को सरकार से तनख्वाह मिलती हैतब भी वे नीच काम क्यों कर रहे हैं , "?कल्याण

की वजह से कई ड्राइवर मज़बूरी में खुनी हो रहें हैं वहीं तो समझ नहीं पा रहा हूं। उनके शोषण" "तो कोई खुद को खत्म कर रहे हैं।

मेरे भी बहुत सपने थे लेकिन सब मिट्टी में मिल गए"।"

"सांसद के पास क्यों नहीं जाते समस्या लेकर। ,विधायक"

"सांसद अच्छे नहीं होते। ,सभी विधायक ?क्या फायदा"

"मतलब"

"को हर गंधे काम से कुछ प्रतिशत पैसा मिलता है। सांसद,विधायक"

"हार मत। संघर्ष जारी रख। तुझे न्याय मिलेगा।"

कितनी पीढ़िया बर्बाद हुई इन ?कब तक“समस्या से।“

कल्याण तुम्हें फुलेक्योंकि उनके विचार से प्रभावित ,आंबेडकर के विचार हार ने नहीं देंगे ,शाहू , सकता। तुझे महापुरुष के विचार अन्याय के विरुद्ध लड़ने के लिए कोई भी व्यक्ति हार नहीं तभी समाज ,प्रोत्साहित करेंगे। तुम्हें लोगों को संगठित करना होगामें जागरूकता आएगी और प्रशासन में परिवर्तन तभी संभव हैअन्यथा नहीं। ,

“रहूंगा। हार नहीं मानूंगा। विश्वजीत मैं अंत तक भ्रष्ट व्यवस्था के खिलाफ़ लढ़ता ...हां“

”....मैं फोन रखता हूं।खुद का ख्याल रखना। बाय ,कल्याण आफ़िस में कोई आया है“

तुम भी परिवार का ख्याल र“खना। कभी”....कभार फोन लगाते रहना। बाय-

ग़ज़ल-1

केशव शरण

चाह रखते हुए पग उठाना नहीं
बद गली हुस्न के पास जाना नहीं

अब्र माने बुरा है सितारे जलें
देखकर चाँद को मुस्कुराना नहीं

फूल छोड़े नहीं तितलियाँ फड़फड़ा
इस तरह तुम किसी को सताना नहीं

ऐ वियोगी न जल मस्त ख़ुद में युगल !
काम उनका तुम्हें है चिढ़ाना नहीं

यश गँवाओ नहीं आशिक़ी में कमा
कल न हो ये कि तुम आशिक़ाना नहीं

रूप दुनिया बदलती हुई रोज़ ही
इस प्रगति में किसी का ठिकाना नहीं

इम्तहांइम्तहां ,इम्तहां ,इम्तहां ,
लोग छोड़ें कभी आज़माना नहीं

ग़ज़ल-2

रात बजता दिवानगाड़ा है-
चैन फिर नींद का कबाड़ा है

कुश्तियाँ हो रहीं जहाँ देखो
यार संसार क्या अखाड़ा है

डर गये सब दहाड़ से फिर भी
सर्कसी शेर ने दहाड़ा है

खोद जड़ अर्थलोभ कहता ये-
पेड़ तूफ़ान ने उखाड़ा है

मैं गुणाभाग कर रहा अब तक-
बालपन का रटा पहाड़ा है

डूब जाऊँ वियोगधारा में-
मारती जब नदी पछाड़ा है

छटपटाता हुआ कलेजा ये
वक़्त ने दर्द बख़्श फाड़ा है

ग़ज़ल-3

क्या लगाकर हिसाब बाँटोगे
चार में इक गुलाब बाँटोगे

बाल जिसके सफ़ेद जिस वय में
हर किसी को ख़िज़ाब बाँटोगे

किस तरह जब हज़ार प्यासे हैं
चार छह बूँद आब-बाँटोगे

आज तक क्या लुटा रहे थे तुम
छोड़ जिसको कि ख़्वाब बाँटोगे

कौन पीते यहाँ उन्हें पकड़ो
क्या कि सबको शराब बाँटोगे

प्रश्न है आँख कौन फोड़ेगा
शहरभर में किताब बाँटोगे-

देशभर से सवाल उठ्ठे हैं-
एकता इक जवाब बाँटोगे !

ग़ज़ल-4

ये पता ही तुझे है बताना नहीं
प्रेमियों का हुआ है ज़माना नहीं

डाल देंगे नमकमिर्च मरहम बता-
ज़ख़्म दिल में छुपा रख दिखाना नहीं

दो बदन एक जां चार दिन के लिए
फिर बदन और जां का ठिकाना नहीं

औरतें ख़ूबसूरतबुरे आदमी ,
कौन अच्छा कि इनका निशाना नहीं

ये सचाई सरल आदमी के लिए
आस रखना लगा और पाना नहीं

है यही वक़्त रख सावधानी बड़ी
भर रहे घाव पर चोट खाना नहीं

सौ बदी तुम भुला दो किसी की मगर
एक नेकी किसी की भुलाना नहीं

लघु कथा

आशीर्वाद के मायने

डा शिवा धमेजा

हर बात क़ो शब्द दिए उन्होंने केवल अपने प्रेम क़ो कभी शब्दों में व्यक्त कभी नहीं किया, जो भी चाहा अपने सामने पाया ! गुड्डे – गुड़ियों से खेलने की उम्र में अपनी किताबों से इतना प्यार किया और कब उनकी छोटी सी छोटू सुन्दर, आकर्षक युवती दिखने लगी ! लगभग हर एक कॉलेज की सहेली क़ो उससे ईर्ष्या हो जाती थी

हर कोई यही सोचता कि बहुमुखी प्रतिभाओं की धनी है पारो पर उसे अपनी सुंदरता नहीं सीरत से ही अर्थ था ! एक दिन पापा से बोली पापा मैं शादी नहीं करना चाहती ! इस बात का मुँह से बोलकर कोई जवाब नहीं दिया उन्होंने ! बिल्कुल खामोश रहें !

ज्यादा कुछ पारो भी बोल नहीं पाई कुछ ही शब्दों में अपनी बात खत्म कर दी उसने ! पापा मैं पढ़ना चाहती हूँ और समाज के लिए भी कुछ करना चाहती हूँ !

पारो की बात खत्म होते ही उसके पापा ने बस इतना ही कहा ठीक है बेटा जाओ पढ़ाई करो अपनी !

उसके बाद पारो की शादी का प्रश्न और उत्तर कुछ भी उनके मन में शेष नहीं रहा ! आशीर्वाद क़ो साक्षात् रूप देने वाले पिता ! समाज के अनेकों सवालों का जवाब बन गए लेकिन पारो के सामने कभी ये सवाल दुबारा नहीं आया !

अकसर हम अपने बड़ो से आशीर्वाद पाकर धन्य हो जाते हैं और आशीर्वाद एक अदृश्य शक्ति की तरह जीवन के हर कठिन रास्ते पर साथ साथ चलता रहता है

माता पिता हमें जो आशीर्वाद देते हैं वो दिखता नहीं होता है ! बिल्कुल इसी तरह ये जीवन – उनका आशीर्वाद प्रत्यक्ष रूप लेकर सामने नहीं उसकी अपनी छवि में विद्यमान हो गया है मानो !

उन्होंने आशीर्वाद दिया नहीं उसे फलीभूत भी किया ! सच्चा आशीर्वाद ऐसा होता है !

इसलिये ही कहते हैं कि जो देना है तो दिल से दें अन्यथा दें ही नहीं !

कहीं तुम्हें मेरी नज़र न लग जाए...

समीर उपाध्याय

मिलन और मेघना की आज़ शादी की पांचवी सालगिरह है। घर पर शाम को एक बहुत बड़ी पार्टी का आयोजन किया है। बड़ी धूमधाम के साथ मेहमान नवाजी होने वाली है।

मिलन“ -मेघनाकाली जुल्फों में उलझ जाऊं और -आज़ मन करता है कि तुम्हारी इन लंबी काली , लाल रंग के फूलों का यह ब्रोच लगाऊं।“

मेघना“ -बहुत खूब”!आज़ बड़े रोमांटिक मिज़ाज में लग रहे हैं !

मिलन“ -मैं चाहता हूं कि आज़ शाम पार्टी में तुम अपने लंबे काले बालों में लाल फूलों का ब्रोच लगाओ। बड़े प्यार से इसे बाज़ार से खरीद कर लाया हूं। यह ब्रोच मेरी ओर से तुम्हें प्यार का तोहफ़ा समझो।“

मेघना“ -आप कमरे की सजावट कीजिए। समय बहुत कम है। अभी मेहमान आ जाएंगे। मैं अपने कमरे में तैयार होने के लिए जा रही हूं।“

मिलन ने अकेले रंगगुब्बारों और फूलों से पूरे कमरे को सजाया। ,बिरंगे पताकों- “ -पूरे दो घंटे लग गएं। मेघना ने अपने कमरे से आवाज़ लगाई कमरे की सजावट में उसेसुनते हो जी“अब मैं तैयार हो गई हूं। ज़रा मेरी साड़ी में ये पीने लगा दीजिए। !

मिलन तुरंत मेघना के कमरे में पहुंचा और देखा कि मेघना सजधज - क मिलन में उसकी साड़ी में पीन लगा दी।कर तैयार हो गई है। मेघना के कहने के मुताबि

मेघना“ -मिलनयह !देखो यह काले रंग की गोल्डन बॉर्डर वाली साड़ी मुझे कितनी जच रही है , साड़ी मेरी मां ने भेजी है। यह पेंडल सेट देखो जो मेरी दीदी ने अहमदाबाद से भेजा है। मुझे बेहद पसंद आया। ये चूड़ियां देखो जो मेरी मौसी ने भेजी है। मैं कितनी सुंदर लग रही हूं”!

मिलन“ -बहुत सुंदर लग रही हो”......तुम्हारी सुंदरता को चार चांद लग जाते यदि तुमने !

मेघना“ -मतलब”?

मिलन“ -कुछ भी नहीं। बहुत सुंदर लग रही हो। तुम्हें देखकर ऐसा लगता है कि जैसे पूरी कायनात ज़मीन पर उतर आई हो”!

मेघना“ -अरे”?आप पीछे क्यों मुड़ गएं !

अपनी व्यथा को दिल में दबा कर मिलन बोला“ -बसइसलिए कि कहीं तुम्हें मेरी नज़र न लग , “जाए।

राजमाता जीजाबाई

भारत भूमि का इतिहास नारी शक्ति के त्याग तथा बलिदानों से भरा पड़ा है जिनमे एक नाम है – वीर शिरोमणि माता जीजाबाई !भारत का हर एक बच्चा इस नाम से भलीभांति परिचित है!

जीजाबाई शिवाजी की माता की नहीं अपितु उनकी मार्गदर्शक प्रेरणा स्त्रोत तथा उनकी मित्र थी ! पग पर अनेक कठिनाइयों का-उन्होंने अपने जीवन में पगतथा विषम परिस्थितियों का सामना किया न उन्होंने अपनेलेकि !धैर्य तथा साहस को कभी कम नहीं होने दिया!

माता जीजा बाई का जन्म को बुलढाणा क्षेत्र में हुआ 1598 जनवरी 12जो कि अब महाराष्ट्र में स्थित है इनके !पिता का नाम लखुजी जाधव तथा माता का नाम महालसाबाई थालखुजी ! जाधवसिंदखेड के राजा थे और वह अपनी पुत्री को जिजाऊ नाम से पुकारते थे!

लखुजी जाधव ने अपने घर पर होली का उत्सव रखा था जिसमें सुल्तान के साथ मोला जी को भी निमंत्रण दिया गया !मोला जी जो कि एक सेनापति थे वह अपने पुत्र !शाहजी के साथ उत्सव में शामिल हुये!

जिजाऊ और शाह जी की उम्र में उससमय ज्यादा नहीं थी लेकिन दोनों को साथ खेलता देख लखुजी जाधव के मुंह से निकला- वाह क्या जोड़ी है !जिसे सुनकर मोला जी ने जिजाऊ का अपने पुत्र के लिये हाथ मांग लियाऔर उनक !ा विवाह करा दिया गया !

जब जीजाबाई तथा शाहजी बड़े हुए !तब शाहजी बीजापुर दरबार में राजनयिक के पद पर नियुक्त हुये बीजापुर के महाराज ने !उनकी राजनीतिज्ञ तथा कूटनीति से बहुत अधिक प्रभावित थे क्योंकि उनके साथ उन्होंने कई युद्ध जीत लिए थे जिससे खुश होकर !वहां की राजा ने उन्हें बहुत सी जागीर दी !जिनमे शिवनेरी का दुर्ग भी शामिल थापुत्र 6 यहीं पर माता जीजाबाई ने ! तथादो पुत्रियों को जन्म दिया!

माता जीजाबाई का अपने पिता को संदेश :-

एक समय ऐसा आया कि जीजा बाई के पिता जाधव जी मुगलों के पक्षधर थे शासक ने जब मुगल !जाधव जी को आदेश दिया कि वह शाह जी को बंदी बना कर लाये जब !जाधव जी, शाहजी का पीछा कर रहे थे !तब शाहजी अपनी गर्भवती पत्नी जीजाबाई को शिवनेरी के दुर्ग में छोड़कर आगे बढ़ गयेजब पीछ !ा करते हुए जाधव जी शिवनेरी दुर्ग पहुंचे तो उनकी भेंट अपनी पुत्री जिजाऊ से हुई!

तब जीजाबाई ने अपने पिता से कहा –" मैं आपकी दुश्मन हूं, क्योंकि मेरा पति आपका शत्रु है ! दामाद के बदले बेटी ही हाथ लगी है, जो कुछ करना चाहो, हाजिर हूं"!

तब एक पिता ने कहा कि बेटी तू अपने मायके मेरे साथ चल!

तब जीजाबाई ने कहा –" मैं एक आर्य नारी हूं और आर्य नारी अपने पति के वचनों का पालन करती है"!

यह सुनकर हताश होकर जाधव जी अपने घर लौट गए!

शिवाजी के जीवन में माता जीजाबाई की भूमिका :-

जब अफजल खा से युद्ध करते समय शाहजी तथा संभाजी वीरगति को प्राप्त हो गये !तब जीजाबाई ने सती होने की इच्छा जाहिर की !तब शिवा जी ने उन्हें सती होने से रोक दिया तथा अपने साथ राज कार्य में भूमिका निभाने की प्रार्थना की तब जीजाबाई अपने पुत्र शिवाजी को ! स्वराज्य के लिए प्रेरित करती है !उन्हें महाभारत रामायण तथा महापुरुषों की कहानियां सुनाती ! कूट कर स्वराज्य का-र दिमाग में कूटउनके दिल औमंत्र भरती !जिसका परिणाम यह हुआ कि बालक शिवा आगे चलकर छत्रपति शिवाजी महाराज कहलाये!

एक समय की बात है कि जब छत्रपति शिवाजी महाराज वर्ष के थे 14तो उनकी माता ने कहा कि बेटा शिवा तुम मेरे दिल के नासूर को कब निकालेगा!

तब शिवाजी ने कहा माता आपको क्या कष्ट है!

बेटा तुम देख रहे हो कि सिंदगढ़ के दुर्ग पर विदेशी झंडा मुझे सोने नहीं देता हैजब तक यह ! रहेगामेरे दिल में नासूर की तरह चुभता रहेगा!

उन्होंने माता जीजाबाई के सामने सिर झुकाते हुए कहा कि“ माता मुगलों की सेना हमारी तुलना में बहुत अधिक है उनकी स्थिति के सामने !हमारी स्थिति बहुत कमजोर है, ऐसे में उनसे युद्ध करना बहुत कठिन कार्य है”!

इतना सुनकर जीजाबाई को आवेंश आ गया उन्होंने कहा !शिवा ये पहन चूड़ियां !मैं स्वयं सिंदगढ़ पर आक्रमण करूंगी और विदेशी झंडे को उतार फेकूंगी !

मां की बात सुन शिवाजी ने शर्म से सिर झुका लिया और बोले“ मैं आज ही सिंगड़ पर आक्रमण करूंगा चाहे परिणाम जो भी हो”!

उन्होंने तुरंत सेना को आदेश दिया और अपनी सेना पति तानाजी के साथ सिंह गढ़ पर चढ़ाई कर दी जिसका परिणाम यह हुआ कि !सिंगर पर शिवाजी ने अपना अधिपत्य स्थापित किया परंतु तानाजी बिनती को प्राप्त हो गएऔर छोटी सी उम्र में ही स्वराज की नीं !व रख दी!

जीजाबाई के रहते ही शिवाजी ने छत्रपति का पद प्राप्त कर लिया था और स्व राज्य स्थापित कर लिया!

इसलिए सच ही कहा गया है कि नारी अबला नहीं सबला है अगर वह कुछ ठान ले !

मणि माला के मध्यमणि महाकवि कालिदास

हो धरणि चाहे शरद की,

चांदनी में स्नान करती,

वायु ऋतु हेमंत की चाहे,

गगन में हो विचरती,

'मेघ' जिसजिस काल पड़ता-,

मैं स्वयं बन मेघ जाता!

(हरिवंश राय बच्चन (

महाकवि कालिदास को संस्कृत भाषा का मूर्धन्य विद्वान माना जाता हैइनकी समस्त !
कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं उनकी रचनाएं अलंकार !रचनाये संस्कृत भाषा में है
इनकी जन्म के विषय !युक्त किंतु सरल एवं मधुर भाषा के लिए सर्वश्रेष्ठ मानी जाती हैं
में काफी विवाद रहा है फिर भी कालिदास का जन्म उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले के
काबिल्ठा गांव में हुआयहीं पर ही रह कर !इसी ग्राम में इनकी प्रारंभिक शिक्षा हुई !

मेघदूत, कुमारसंभव तथा रघुवंश जैसे महाकाव्य की रचना कीकाबिल्ठा गांव में सरकार ! साथ कालिदास की प्रतिमा भी -गया तथा साथ के द्वारा एक सभा घर का निर्माण कराया प्रत्येक वर्ष जून माह में देश के विद्वानों के द्वारा !स्थापित की गई3 दिन की गोष्ठी का आयोजन किया जाता हैजिस !में भारतीय दर्शन व साहित्य पर विचार विमर्श किया जाता हैउनकी कला तथा प्रतिभा !कालिदास का नाम साहित्य के क्षेत्र में अद्वितीय है ! !के कारण बहुत से रचनाकारों ने उन्हें राष्ट्र कवि की संज्ञा दी है

महाराज चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार में नवरत्नों में कालिदास शामिल थे! उनके अमूल्य साहित्य तथा प्रतिभा के कारण कवियों ने कविकुलगुरु उपाधि से विभूषित किया है! कवियों के द्वारा कालिदास को संस्कृत साहित्य की मणि माला के मध्यमणि कहा गया है! कालिदास ने अपनी रचनाओं में अलंकार, सरल एवं मधुर भाषा का प्रयोग किया है तथा श्रृंगार रस के सौंदर्य परिपूर्ण कर रखा है! प्रकृति का सजीव चित्रण तथा ऋतुओं की जो अनुपम व्याख्या महाकाव्य में की गई है! वह सराहनीय है! कालिदास के साहित्य में संगीत प्रमुख अंग रहता था तथा साथ-साथ यह अपनी रचनाओं में आदर्शवादी तथा नैतिक मूल्यों का भी ध्यान रखते थे!

महाकवि कालिदास द्वारा रचित “अभिज्ञान शाकुंतलम्” संस्कृत की सर्वश्रेष्ठ रचना है! जिसका अनुवाद यूरोपीय भाषाओं में किया गया है! इसके बाद मेघदूतम दूसरी सर्वश्रेष्ठ रचना है! इस रचना में प्रकृति का सजीव चित्रण किया गया है!

महाकवि कालिदास की को रचना जिनका संस्कृत साहित्य में अपनी अलग ही पहचान है! इनमें प्रमुख हैं -

अभिज्ञान शाकुंतलम्, मालविकाग्निमित्रम्, रितु समहारा, रघुवंश, कुमारसंभव और मेघदूत है!

ऋतुसंहार

यह कालिदास की सर्वप्रथम कृति हैंयह गीतिकाव्य है जिसमें षडऋतुओं ! का छः सर्गों में वर्णन हैं!ऋतुओं का वर्णन प्रायः उद्दीपन रूप में हुआ हैं !

मेघदूत

यह एक गीतिप्रधान खंड काव्य हैंइसमें कुबेर के शाप से रामगिरी में निर्वासित एक ! !प्रिया को संदेश भेजता हैं यक्ष वर्षा ऋतु आने पर मेघ के द्वारा अपनी अलका प्रवासिनी इसके दो खंड हैं पूर्व मेघ तथा उत्तर मेघ!

कुमारसंभव

यह एक महाकाव्य हैंइस महाकाव्य में पार्वती विवाह !, कुमार जन्म, तारकासुर वध की कथा प्रमुख हैं, शेष प्रासंगिक कथायें हैं इस महाकाव्य में !17 सर्ग हैंपरन्तु कुछ ! प्रथम आठ को ही प्रमाणिक मानते हैं विद्वान् इनमें से, शेष सर्गों को विद्वानों द्वारा बाद में जोड़ा हुआ माना गया हैं!

रघुवंश

रघुवंश महाकाव्य कालिदास सर्वोत्कृष्ट रचना हैं!

रघुवंश के 19 सर्गों में सूर्यवंशी राजाओं दिलीप से लेकर राम तथा राम के वंशजों का चरित्र चित्रण किया गया हैं इस महाकाव्य के प्रथम !9 सर्गों में राम के चार पूर्वजों दिलीप, रघु, अज और दशरथ का वर्णन मिलता हैं तथा दसवें सर्ग से 15 वें सर्ग तक के 6 सर्गों में राम के जीवन वृत्त का वर्णन हैं!

16 वें सर्ग से 18 वें सर्ग तक के चार सर्गों में राम के वंशजों का वर्णन मिलता हैं !19 वें सर्ग में कामुक अग्निवर्ण का वर्णन मिलता हैंसभी रसों का सुंदर वर्णन इस काव्य . रघु और राम के युद्ध वर्णनों में जहाँ वीर रस का चित्रण हुआ हैं !में हुआ हैं, वहां आर्त विलाप में करुण रस की अजस्र धारा प्रवाहित होती हैं!

मालविकाग्निमित्र

कालिदास द्वारा रचित यह नाटक हैं इसमें पांच अंक !है जिनमें शुंगवंश के संस्थापक पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र और मालविका के प्रणय का सुंदर वर्णन किया गया हैंकवि . का यह प्रथम नाटक हैं, अतः काव्य कौशल का प्रौढतम रूप इसमें उपलब्ध नहीं होता, फिर भी नाट्य कला की द्रष्टि से यह एक अत्यंत सुंदर रचना हैं!

विक्रमोर्यवशियम्

कालिदास की नाट्यकला सम्बन्धी विकास की द्रष्टि से इस नाटक का द्वितीय स्थान हैं ! इसमें !पांच अंकों के इस नाटक में पुरुरवा उर्वशी की प्रसिद्ध पौराणिक कथा वर्णित हैं !चित्रण बड़ी मार्मिकता से किया हैं कवि ने पुरुरवा तथा उर्वशी के उद्गम प्रेम का

अभिज्ञानशाकुन्तलकालिदास द्वारा रचित यह नाटक हैंइसमें पांच अंक है जिनमें ! शुंगवंश के संस्थापक पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र और मालविका के प्रणय का सुंदर वर्णन किया गया हैं. कवि का यह प्रथम नाटक हैं, अतः काव्य कौशल का प्रौढतम रूप इसमें उपलब्ध नहीं होता, फिर भी नाट्य कला की द्रष्टि से यह एक अत्यंत सुंदर रचना हैं!

विक्रमोर्यवशियम्

कालिदास की नाट्यकला सम्बन्धी विकास की द्रष्टि से इस नाटक का द्वितीय स्थान हैं! पांच अंकों के इस नाटक में पुरुरवा उर्वशी की प्रसिद्ध पौराणिक कथा वर्णित हैं! इसमें कवि ने पुरुरवा तथा उर्वशी के उद्गम प्रेम का चित्रण बड़ी मार्मिकता से किया हैं!

अभिज्ञानशाकुन्तलयह संस्कृत साहित्य का सर्वश्रेष्ठ नाटक हैं! भारतीय परम्परा इस नाटक को संस्कृत साहित्य का सर्वश्रेष्ठ नाटक मानती हैं काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला इसकी कथा महाभारत से ली गई हैं! इसमें सात अंक हैं-

इसमें हस्तिनापुर के राजा दुष्यंत तथा शकुंतला के प्रेम, वियोग तथा पुनर्मिलन की कथा का वर्णन हैं! इसमें श्रृंगार और करुण रस का सुंदर निष्पादन हुआ हैं! कालिदास का यह नाटक नाट्यकौशल का सर्वश्रेष्ठ उदहारण हैं! नाटक का चतुर्थ अंक सर्वश्रेष्ठ हैं! कवि की सबसे महान विशेषता यह है कि इस नाटक का प्रत्येक पात्र चरित्र की द्रष्टि से सुद्रढ़ एवं आदर का पात्र हैं इसमें कविता की कोमलता, भावों की गहराई और उदात्ता आदि का सुंदर समावेश हैं!

कालिदास हिंदी साहित्य जगत के रत्न स्वरुप हैं, जिन्होंने अपनी उत्तम कृतियों को संस्कृत भाषा में अत्यंत माधुर्य भाव से रचा है , जिन्हें आज भी पाठक ज़ब पढ़ता है तो उसी परिवेश को अपने आस पास जीवंत महसूस कर पाता है, जिस में उसे लिखा गया ! को इतने सजीव ढंग से प्रस्तुत किया गया कालिदास जी की रचनाओं में प्रकृति है कि समस्त वातावरण भी मानों बोल उठता है यही जीवंतता एक उत्तम कृति व कृतिकार ! ! की सफलता होती है

बृजेश कुमार

आमेर दुर्ग

- आमेर दुर्ग का क्षेत्र अमरीश ऋषि की तपोस्थली थी जिनके नाम पर इसका नाम अंबेर, अबरीश पुर, अंबावली तथा अंबिकापुर आदि नामों से जाना जाता है!

- आमेर दुर्ग गिरी दुर्ग की श्रेणी में आता है!
- आमेर के शासकों द्वारा बनवाया गया प्राचीन महल कदली महल है! इन महलों का निर्माण राजदेव ने करवाया था! और इन महलों में एक छतरी भी बनी हुई है जिस पर आमेर के शासकों का राजतिलक होता था! यह महल आमेर किले के पीछे की घाटियों में बना हुआ है!
- आमेर दुर्ग मे महलों का निर्माण राजा मानसिंह ने शुरू करवाया था! जिस राजा मानसिंह महल के नाम से जाना जाता है!
- बिशप हैबर ने आमेर के महलों की सुंदरता को देखकर लिखा है –" कि मैंने क्रेमलिन में जो कुछ देखा है और अल ब्रहमा के बारे में जो कुछ भी सुना है, उससे भी बढ़कर यह महल है!

- यूनेस्को द्वारा सन 2013 में आमेर दुर्ग को विश्व विरासत स्थल का गौरव प्राप्त है!

दर्शनीय स्थल :-

- मावठा झील तथा केसर क्यारी :-

आमेर दुर्ग के नीचे मावठा झील स्थित है! उसी के मध्य सुगंधित केसर की क्यारी या बनी हुई थी! जब हवा चलती थी तब केसर की खुशबू से दुर्ग महक जाता था!

- शीश महल :-

आमेर दुर्ग में स्थित शीश महल में कांच का बहुत सुंदर तथा बारीक़ काम किया गया है! जिसके बारे में महा कवि बिहारी ने आमेर के शीश महल को दर्पण धाम कहकर संबोधित किया है!

- दीवान ए आम :-

आमेर दुर्ग में यह वह भवन है जहां राजा का आम दरबार होता था! राजा यहां जनसामान्य से मिलता था! यह 40 स्तंभों से सुशोभित है इसका निर्माण मिर्जा राजा जयसिंह द्वारा करवाया गया!

- जय गढ़ :-

यह दुर्ग सवाई जयसिंह द्वारा निर्मित किया गया! यहां पर विश्व की सबसे बड़ी तोप जय बाण को रखी हुई है!

- हवा महल :-

हवामहल का निर्माण सवाई प्रताप सिंह द्वारा 1799ई मे किया गया था! इसमहल में झरोखे बने हुए हैं! जिन से ठंडी हवाएं आती है!

- जंतर मंतर :-

सवाई जयसिंह द्वारा निर्मित पांच वेधशालाओ में सबसे बड़ी वेधशाला है! इसके अन्य वेधशाला दिल्ली, उज्जैन, वाराणसी तथा मथुरा में है!

- अल्बर्ट हॉल :-

सन 1876 में प्रिंस अल्बर्ट द्वारा शिलान्यास एवं सर सिवन्टन जैकब द्वारा रूपांकित यह इमारत भारतीय तथा फारसी शैली का मिश्रण है!इसे सवाई राम सिंह

द्वारा प्रारंभ किया गया तथा महाराजा माधो सिंह के काल में 1887 मे सर एडवर्ड ब्रेड फोर्ड ने उद्घाटन किया!

- सौभाग्य मंदिर (सुहाग मंदिर):-

यह एक आयताकार महल है! जो रानियों के मनोविनोद तथा हास परिहास का स्थान था!

- स्टेच्यू सर्किल :-

यहां जयपुर के निर्माता सवाई जयसिंह की मूर्ति स्थित है!

अन्य स्थल :- बिरला मंदिर, कनक वृंदावन, साल्ट म्यूजियम (सांभर), सिसोदिया गार्डन, गैटोर की छतरियां(शाही शमशान घाट), गलताजी, सिटी पैलेस आदि!

अन्य महत्वपूर्ण बिंदु :-

- जयपुर की स्थापना महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा 18 नवंबर 1727 ई को वास्तुशिल्पी विद्याधर भट्टाचार्य द्वारा निर्मित मॉडल पर की गई है!
- सवाई राम सिंह द्वितीय ने जयपुर की सभी इमारतों पर गुलाबी रंग करवाया था!
- सांगानेर में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा स्थित है! यह सांगानेरी प्रिंट हेतु भी प्रसिद्ध है!
- जलेब चौक से राज प्रसाद में जाने के लिए सिंहपोल प्रवेश द्वार है, जिसके पास में शिला माता का प्रसिद्ध मंदिर है!

पुस्तक समीक्षा

कहानी संग्रह महुडी :

कहानीकार भारत दोसी :

प्रकाशक कलमकार मंच :

मूल्य 150 :रू

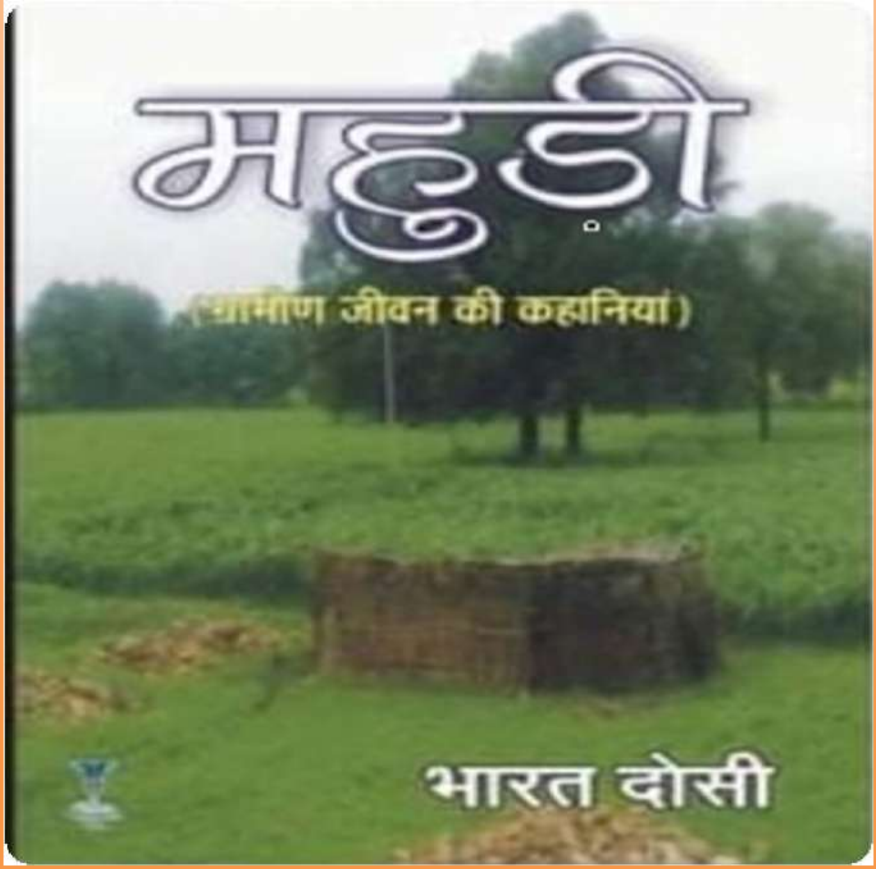

सजीवता और स्थानीयता लिए कहानियां

भारत दोसी का कहानी संग्रह कहानियों का नायाब 27 ग्रामीण जन जीवन पर लिखी गई " महुडी " गुलदस्ता है।

दक्षिण राजस्थान का ग्रामीण जीवन इस संग्रह की कथा वस्तु है जो गरीबशोषित है जिसमें ,वंचित , दिशाहीनता आदि है इसका पात्रों के माध्यम से सजीव चित्रण किया ,मानसिक भटकाव ,उलझन ,द्वंद ,तनाव स्वयं क ,गया है । वहीं कहानीकार ने अपने आसपास के पात्रोंे भोगे हुए यथार्थ को शब्दों के माध्यम से बाँधा है इसलिए यह नई कहानी मानी जाती है ।

पुस्तक के शीर्षक कहानी महुडी में तो शराब के दुष्परिणाम को ऐसे वर्णित किया है जैसे घटना हमारे समक्ष ही हो रही हो । जमीन का टुकड़ाकाला चेहरा आदि कहानियां स्त् ,रमीला ,री व्यथा को संवेदना पूर्वक उकेरी है ।

लौटने का वक्त चला गया कहानी का कथ्यशिल्प उत्कृष्ट है यह कहानी एक स्त्री को सभी मार्ग खुले होने के , बावजूद एक मोह से बंधे होने से मुक्ति के आधुनिक संदर्भों को प्रस्तुत करती है ।

राजनीति और सरकारी व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचारचरित्रहीनता के कारण पिसते बेरोजगार युवाओं की , उलझन है तो इससे निकलने का सफल होने की दिशा ,मार्गहीनता को बताती कहानियां किलकारी ,दुविधा देती कहानी मुंडेर का सूरज भी है ।

कुछ कहानियां डायन प्रथाऔर परंपर ,आत्मा भटकाव ,डाम प्रथा ,ा को तोड़ने की सजा पर है तो कुछ कानून के कारण आ रहे जीवन मे बदलाव को भी रेखांकित करती है ।

कहानियों में स्थानगांव के नाम आदि स्थानीय होने से सजीवता देते है वहीं वागडी बोली के संवाद , सार्थकता देते है ।

इस संग्रह की कहानियां पाठकों को नया संस्कार देती है तो पुराने को सहेजने का पाठ पढ़ाती है । कुछ कहानियां रौचकमनोरंजक है । ,

अशोक मदहोश

भाग-2

* कुछ विचार,कुछ भाव *

डॉ आर बी भंडारकर

एक सुंदर सलौना छोटा-सा गाँव।ऊँचाई पर बसे होने से उसका सौंदर्य द्विगुणित हो रहा है।गाँव की गलियाँ हर मौसम में साफ-सुथरी रहती है।गाँव के तीन ओर खेतों की हरियाली के रमणीय दृश्य है तो पूर्वी छोर पर कल कल करती निर्मल कल्लोलिनी सतत बह रही है।

आम तौर पर बरसात में गाँवों की कच्ची गलियों में कुछ देर तक पानी भरे रहने से कीचड़ हो जाता है पर इस गाँव में ऐसा नहीं होता है।पानी बरसते ही निचाई की ओर ढुलक जाता है जो छोटे छोटे नरिया-नालों से होकर अंततः नदी में चला जाता है।

खुशहाल गाँव है।लोग अच्छे हैं, मेहनती हैं।खेतों में तरह तरह की पर्याप्त उपज होती है। पास के बीहड़ में नाना प्रकार की जो घास है उसे चर कर पशुधन सदैव हृष्ट-पुष्ट रहता है।पास बह रही जीवनदायिनी सरिता वरदान ही है।गाँव के लोग इसमें अपने पशुओं को पानी पिलाते हैं ,नहाते हैं और इसी में अपने पहनने-ओढ़ने के कपड़े-लत्ते धोते हैं।कुओं का पानी केवल रसोई और पेयजल के रूप में उपयोग किया जाता है जबकि पास की नदी के कारण इन कुओं में बारहों महीने भरपूर जल विद्यमान रहता है।

वर्षा ऋतु में नदी में अक्सर बाढ़ आती है तब यह गाँव चारों ओर से पानी से घिर जाता है।इसकी स्थिति एक टापू जैसी हो जाती है ; न तो गाँव के व्यक्ति और पशु बाहर जा पाते हैं और न कोई बाहर से गाँव मे आ पाता है।अभी बाढ़ आई हुई है।मुझे बचपन में अम्मा ने बताया था कि बाढ़ दो तरह की होती है।एक ऊपर की बाढ़ और एक नीचे की बाढ़।मैं अम्मा की ओर टुकुर टुकुर देखता रहता हूँ,वे बताती रहतीं।जिधर से नदी आती है उधर दूर दूर तक जब कहीं मूसलाधार बरसा होती है तो उस वर्षा का ढेरों पानी नदी में आने लगता है जिससे नदी में उफान आ जाता है।यह पानी जल्दी आगे की ओर बढ़ता है जिससे उफनाती नदी की धार भी तेज हो जाती है।यह ऊपर की बाढ़ होती है।ऊपर की बाढ़ में कभी कभी तो ऊपर से बहुत सारा पानी अकस्मात आ जाता है, जिससे जिभी गिरती है जो बहुत खतरनाक होती है।इस बाढ़ का पानी दहाड़ जैसी गर्जना करते हुए अत्यंत तेज गति से सीधा चला जाता है ,आसपास नहीं फैलता।.....नदी बह कर जिधर जाती है और जिस नदी में मिलती है यदि उस नदी में जब ऊपर की बाढ़ आ जाती है तब उसमें पानी बढ़ जाता है जिससे अपनी इस नदी का पानी उसमें समा नहीं पाता है, रुक जाता है तब पानी उलट कर नदी के घारे में फैलने लगता है इसे नीचे की बाढ़ कहा जाता है।अभी यह नीचे की ही बाढ़ आई हुई है।

बाढ़ का यह हाल अक्सर हर साल होता है इसलिए यहाँ के लोग इस स्थिति के अभ्यस्त हो गए हैं, सजग भी हो गए हैं।वे जान गए हैं कि बाढ़ की यह स्थिति सप्ताह भर या कभी कभी पखवाड़े भर रहती है सो वह सब लोग इतने समय के लिए,अपने लिए और अपने पशुधन के लिए भोजन-सामग्री आदि का प्रबंध पहले ही करके रख लेते हैं।इसलिए उन्हें कोई बड़ी असुविधा नहीं होती है असुविधा होती है केवल “दिशा मैदान” जाने की।

बच्चों को बाढ़ के ऐसे नजारे बहुत भाते हैं।भाएँ भी क्यों न,साल में एक बार ही तो देखने को मिलते हैं जो।वैसे भी बच्चों को वर्षा ऋतु ही बहुत भाती है।घाघ जी ने कहा है न "वर्षा ऋतु में चार सुखारी।वन बालक अरु भैंस,उखारी।" जब बाढ़ आती है तो इस गाँव में तो आती ही है पर आसपास के सभी गाँवों की किसी न किसी दिशा में भी बाढ़ अवश्य ही आती है ; सो बच्चे रोज ही अपने आसपास के खेत-खलिहान, रास्ते-नरियों ने भर आये बाढ़ के पानी में छप-छप करके उछलते कूदते हैं, एक दूसरे पर पानी उछालते हैं; कागज की नाव चलाते हैं, तालियाँ बजाते हैं फिर लोरते हैं इस पानी में।मैं भी होता था ऐसा करने वालों में।बाढ़ के पानी में अठखेलियाँ करते हुए बच्चों को इतना मजा आता कि किसी का भी घर जाने का मन ही नहीं होता।घर तभी जाते जब हार-थक जाते या फिर दद्दा, अम्मा,भैया में से कोई लगोदा(डंडा)लेकर बुलाने आता।घर पहुँचने पर कोई गुस्सा नहीं होता(अपनों का डंडा तो केवल भयभीत करने के लिए हुआ करता है)प्रत्युत अम्मा अवश्य ही कहतीं-"चल बंदर,कहाँ कहाँ लोट कर आया है, चल तुझे अच्छे पानी से नहला दूँ,पता है नदी के एक जगह भरे हुए पानी से फोड़े-फुंसी हो जायेंगे।" फिर अम्मा कुएँ के पानी से मल मल कर नहलाती,फिर सरसों के शुद्ध तेल से पूरे बदन की मालिश करती ।उनका कहना था कि सरसों के तेल से शरीर पर चिपक गए सब जीवाणु,विषाणु मर जाते हैं।

शौक़ीन लोग भी आकर्षित होते हैं बाढ़ के इन दृश्यों की ओर।वह फोटोग्राफी करते हैं, अपने एलबम के लिए।अखबार-नबीसों को बढ़िया विषय मिल जाता है अपने अख़बार के लिए,वे बाढ़ की सारी स्थितियां देखते हैं फिर जन कल्याण के भाव से प्रस्तुत करते हैं अपने पाठकों,आम जन और सत्ताधारियों के सामने,अपने अखबार के माध्यम से।

कहा जाता है कि एक बार एक सहृदय जन प्रतिनिधि ने बरसात में टापू बन जाने वाले इस गाँव को यहाँ से हटा कर नदी से किंचित दूर चौरस में बसाने की अनुशंसा सरकार से की थी,जो सरकार ने मान भी ली थी पर गाँव वाले हटने के लिए राजी नहीं हुए।सबका एक ही कथन था –"पुरखा-पेंड़ (पीढ़ियों)के घर कैसे छोड़ दें।जहाँ तक परेशान होने की बात है, तो परेशानी तो हफ्ता-पंद्रह दिन की ही होती है पर नदी हमारे खेतो में बढ़िया उपजाऊ मिट्टी भी तो उड़ेल जाती है इस बाढ़ से।"

अहा ! कितने निर्मल भाव है हमारे गाँवों के सरल- हृदय जन के।

नदी,पहाड़,कंकड़-पत्थर जंगल-बीहड़ और इनमें पले बढ़े,पेड़-पौधे ,जीव-जंतु सब संगी-साथी से हैं हम गाँव वासियों के।इन सबसे हमारा परिवार के सदस्य जैसा भाव हो जाता है।यह सब भले ही हमारा कभी कुछ नुकसान कर देते हों पर ये देते भी तो हैं बहुत कुछ;तो इनसे दूर ग्राम-वासी कैसे रह सकता है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

समय गतिशील होता है।समय बीतते देर नहीं लगती।गोस्वामी जी इसी सत्य को भगवान राम के माध्यम से देवी सीता जी से कहलवाते हैं- "दिवस जात नहिं लागिहि बारा। सुंदरि सिखवनु सुनहु हमारा।"

धीरे-धीरे जीवन के लगभग 60 साल बीत गए।सब कुछ बदल गया।मकान कच्चे से पक्के हो गए,पेड़ कट गए, बीहड़ गुम गया,बहड़ारा जंगल उजड़ गया।बीहड़ के पशु-पक्षी अब नदारद हैं।किसानी बदल गयी,हल बखल और बैलों का स्थान ट्रेक्टर और अन्य कृषि उपकरणों ने ले लिया है।पेड़ों की कमी तो वर्षा की कमी।इस कमी से अन्य सब के साथ साथ प्रभावित हुई नदियाँ भी।नदियों के साथ यह कहावत चरितार्थ हुई कि "एक तो वैसेंई दूबरी, ऊपर तें दो आषाढ़।"आशय यह कि नदियाँ तो अल्प-वर्षा का ही दंश झेल रही थीं तिस पर पक्के निर्माणों ने उनकी जीवन-रेत निकाल ली; तो हमारी इन प्यारी नदियों की तो जान ही निकल गयी।अब ये नदियाँ, अधिकांश नदियाँ सदानीरा नहीं रहीं।अब इनमें कभी-कभार बाढ़ तो आती है पर जल सीधा समुंदर में चला

जाता है।जल बचता ही नहीं,जो रेत जल को अपनी देह में भंडारण करता था जब वही नदारद है तो जल की कल्पना व्यर्थ है।

मैं सोचता हूँ,दोष किसी और का नहीं है हम स्वयं ही अपने पैरों में कुल्हाड़ी मार रहे हैं।मन यह सोचकर और भी दुखता है कि हम अपनी भावी पीढ़ी को क्या केवल ऐसी उजाड़ होती हुई धरती ही सौंप जाएँगे या समय रहते जागेंगे ।

व्यर्थ की चिंता और भय एक रोग के समान है जो आपकी आत्मीय शक्ति को छिन्न करती है

साक्षात्कार

नमस्कार मैडम,

नई गूँज पत्रिका के समस्त संपादक मंडल की ओर से आपका हार्दिक अभिनन्दन !

इस पत्रिका के माध्यम से हमारा यह प्रयास रहा है कि हम अपने पाठकों क़ो समाज के विभिन्न क्षेत्रों उच्च स्थान पर पहुँच कर समाज क़ो लाभान्वित करने वाले सम्माननीय गणों से मिलवाते हैं ! आप ने जिस उच्च पद क़ो मेहनत और दृढ़ निश्चय से प्राप्त किया है, उसके लिए हम आपको हार्दिक शुभकामनायें देते हैं ! आपके प्रयासों ने मनोविज्ञान सम्बंधित क्षेत्रों में समाज क़ो महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है ! जिसके लिए आपको शुभकामनायें !

आज हम इस साक्षात्कार के माध्यम से आपके जीवन के संघर्षों एवं उन के प्रति आपके विचारों से अवगत करवा रहें हैं, यह हमारा सौभाग्य है ! निश्चित ही जीवन के प्रति आपके दृष्टिकोण से हम सभी क़ो प्रेरणा प्राप्त होगी और साथ ही आई. ए. एस., पी. एच. डी., एच. आर. एम. की अलग अलग प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग लेने वाले विधार्थियो क़ो उचित तैयारी हेतु मार्गदर्शन मिलेगा !

1. मैडम, वर्तमान में आप कौनसे पद पर, कार्यरत हैं ?

नई गूँज पत्रिका का हार्दिक आभार

मैं डॉ चंचल पाल एवं एसोसिएट प्रोफेसर और डायरेक्टर IPMH (इंस्टिट्यूट ऑफ़ प्रोफेशनल एंड मेन्टल हेल्थ(इंस्टिट्यूट जयपुर में कार्यरत हूँ ! पिछले 22वर्षों से इस संस्थान के माध्यम से विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं जैसे आईएएस, पी. एच. डी ., एच. आर. एम. आदि के लिए मनोविज्ञान विषय के विभिन्न कोर्सेज का संचालन किया जा रहा हैं ! इसी के साथ साथ मेरे संस्थान में मनोविज्ञान विषय के अध्यापन के साथ साथ मनोवैज्ञानिक परामर्श भी दिया जाता है !

2. मैडम, आप अपनी प्रारंभिक शिक्षा, व परिवार के बारे में बताइये ?

मेरी प्रारंभिक शिक्षा महावीर स्कूल, उसके बाद, महारानी कॉलेज से बी. एस. सी. मनोविज्ञान में, उसके बाद राजस्थान विश्वविद्यालय से एम. ए. उसके बाद वहीं से मनोविज्ञान में पी. एच. डी. किया ! U. G. C. नेट भी किया !

3. आप अपनी उपलब्धियों के लिए सर्वाधिक योगदान किसका मानते हैं ?

अगर मै उपलब्धियों की बात करुँ तो सर्वाधिक योगदान मेरे माता – पिता का ही है ! मेरी माता एक कुशल गृहिणी
होने के साथ बहुत ही गुणी और बुद्धिमान महिला हैं ! जिन्होंने बचपन से ही घर में पढ़ाई का माहौल बनाये रखा ! इसी वजह से हम लोग उच्च शिक्षा व आज तक की जो भी उपलब्धियां हासिल कर सकें !

4. विधि की प्रतियोगी परीक्षाएं जैसे – आर. जे. एस., A. P. P., J. L. O., इत्यादि की तैयारी करने वाले students क़ो परीक्षा की रणनीति क्या रखनी चाहिए ?

अगर हम प्रतियोगिता परीक्षाओं में विशेष रणनीति की बात करें तो मेरा यह मानना है कि मेहनत तो सबसे जरूरी चीज है लेकिन मेहनत के साथ उचित परामर्श पर मार्गदर्शन की भी बहुत जरूरत है क्योंकि जब स्टूडेंट्स मेहनत करते हैं साथ में सही मार्गदर्शन मिलना बहुत जरूरी चीज है तो स्टूडेंट्स को इसके लिए मेरा यह मैसेज है कि स्टूडेंट्स को पूरी लगन व निष्ठा के साथ और पूरी डिसिप्लिन के साथ पढ़ाई करना चाहिए और हार्ड वर्क करना चाहिए हार्ड वर्क के साथसाथ स्मार्ट वर्क यानी कि सही तरीक-े से सही दिशा में पढ़ाई करने की उनको आवश्यकता है

5. आपके जीवन की सबसे बड़ी चुनौती या संघर्ष क्या रहें?

अगर जीवन की चुनौतियों के विषय में बात की जाए तो चुनौतियां व संघर्ष तो जिंदगी का एक पाठ है और वह तो आएगी ही ! मैंने हमेशा ही अपनी जिंदगी में चुनौतियों का बहुत ही आत्मविश्वास के साथ, सामना किया है तो जिंदगी में जो हमारे संघर्ष होते हैं मैं यह कहना चाहती हूं हमेशा हर्ष स्वीकार करना चाहिए बिना संघर्ष के हमारे जीवन में हमारी कोई उपलब्धि उपलब्धि ही नहीं है जब हम संघर्ष करके विजय को हासिल करते हैं तभी उस जीत के कोई मायने होते हैं तभी हम कह सकते हैं कि यह हमारी उपलब्धि है तो मैंने भी अपनी लाइफ में बहुत सारी चुनौतियों का बहुत बार बहुत सारी संघर्षों का सामना किया है और मुझे ऐसा लगता है किए जो भी संघर्ष होते हैं चुनौतियां होती है इससे मैंने अपने आप को पहले से और ज्यादा बेहतर इन फैक्ट मुझे चुनौतियां स्वीकार करना पसंद ही है नहीं तो अपनी जिंदगी नीरस हो जाएगी बोरिंग हो जाएगी तू जब भी चुनौतियां आती है तो हमें लगता है कि हमें अब कुछ स्पेशल करना है इसके लिए थोड़ा सा हार्ड वर्क करना है

6. एक कामकाजी महिला अपनी दोहरी जिम्मेदारी क़ो निभाती है, एक परिवार के प्रति, दूसरी समाज के प्रति ! आप विशेष तौर पर महिलाओं क़ो कोई सन्देश देना चाहेंगी ?

अगर हम महिलाओं के बारे में सोचते हैं कि महिलाएं ही दोहरी जिम्मेदारी निभाती हैं यह हमारी गलत सोच है मेरा यह मानना है कि महिला या पुरुष कोई भी हो ! जीवन के एक साथ अनेकों जिम्मेदारियां निभाते हैं पारिवारिक सामंजस्य के साथ-साथ अगर करते हुए चलें तो हम अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभा सकते हैं इसका मतलब यह नहीं है कि कोई महिला कामकाजी है तो वह कोई विशेष काम कर रही है घर पर जाकर उन्हें अपनी जिम्मेदारियों को निभाना होता है!

7. युवा पीढ़ी क़ो देश की न्यायिक व्यवस्था में, बदलाव लाने के लिए आगे आना चाहिए ! इस विषय में आप युवा पीढ़ी क़ो यदि कुछ कहना चाहें ?

युवा पीढ़ी, डेफिनेटली युवा पीढ़ी के ऊपर काफी बड़ी जिम्मेदारी होती है ! युवा पीढ़ी नए समाज की जिम्मेदारी होती है और समय के साथ-साथ हमारी सारी व्यवस्थाएं भी बदलती रहती हैं और यह एक नियम भी है कि बदलाव तो होंगे ही समय के साथ नई विचारधारा और परिस्थितियां जन्म लेती हैं न्याय व्यवस्था में भी बदलाव समय की मांग है इसके लिए डेफिनेटली जो एक युवा पीढ़ी है उसकी जिम्मेदारी बनती है क्योंकि युवा पीढ़ी एक नई सोच का पर्याय होती है और नई सोच नई समाज के रूप में युवा पीढ़ी की जो जिम्मेदारी होती है, उसको निभाना होता है !

धन्यवाद मैडम,

आपके शब्दों में बहुत ताकत छिपी है ! जो निश्चित ही हर एक व्यक्ति क़ो जीवन क़ो सही नज़रिये से जीने की प्रेरणा प्रदान करेगी ! आपने साक्षात्कार के माध्यम से कई पाठकों के आगे आने वाले मार्ग क़ो नई रोशनी देकर प्रशस्त किया है !

सम्पादक
शिवा स्वयं
नई गूँज

"संपूर्ण प्राणी जन्म से पहले अप्रकट थे, और मरने के बाद भी अप्रकट हो जाने वाले है, केवल बीच में ही प्रकट है, फिर ऐसी स्थिति में क्या शोक करना?

नई गूँज

मासिक पत्रिका

द्वारा आयोजित

गुरु पूर्णिमा महोत्सव – 2022

के कुछ यादगार पल

गुरु पूर्णिमा
हार्दिक शुभकामनायें...
Praggya Institute
नई गूँज
Future Divine

गुरु पूर्णिमा
नई गूँज

नई गूँज

गुरु पूर्णिमा
हार्दिक शुभकामनायें...
Praggya Institute
Future Divine

गुरु पूर्णिमा
हार्दिक शुभकामनायें...

Praggya Institute

गुरु पूर्णिमा
हार्दिक शुभकामनायें...

गुरु पूर्णिमा
हार्दिक शुभकामनायें...

गुरु पूर्णिमा
हार्दिक शुभकामनायें...

जुलाई अंक 2022 के लेखक परिचय

- गिरेंद्र सिंह भदौरिया

  prankavi@gmail.com

  9424044284

  6265196070

  पता :- वृतायन 957 स्कीम नंबर 51

  इंदौर मध्य प्रदेश पिन :-452006

- डॉ घनश्याम बादल

  215, पुष्परचना, गोविंद नगर

  रुड़की

  9412903681

  Ghansyambadal54@gmail.com

- बृजेश कुमार

  Aryabrijeshsahu24@gmail.com

  9785837924

  पता - जुरेहरा भरतपुर राज.

  321023

- मृत्युंजय कोहरी

  रांची झारखंड

  07903208238

  Mritunjay03021992@gmail.com

- मुनमुन ढाली

  Munfie40@gmail.Com

  पता - रांची झारखंड

- अमरजीत कौके

  संपादक : प्रतिमान (पंजाबी)

  718, रणजीत नगर - ए, भादसों रोड , पटिआला (पंजाब)

  098142 31698

  Email : pratimaan@yahoo.co.in

- केशव शरण

  पता :- एस 2/564 सिकरौल वाराणसी

  व्हाट्सएप नं. : 9415295137

  ईमेल : keshavsharan564@gmail.com

- अशोक मदहोश

  8003022368

- डा. आर.बी. भंडारकर

  सी -9 स्टार होम्स

  रोहित नगर फेस-2

  भोपाल ,462039

dr.r.b. bhandarkar@gmail.com

- गौरीशंकर वैश्य

117 आदिल नगर,
विकास नगर   लखनऊ 226022
मो; 09956087585
Gsvaish51@gmail.com

- डॉ शिवा धमेजा   9351904104

Drshivadhameja01@gmail.Com
पता :- 140A गायत्री नगर जयपुर

- रामेश्वर

हिंदी विभाग डॉ बालासाहेब अंबेडकर
मराठवाड़ा विश्वविद्यालय
औरंगाबाद महाराष्ट्र 431004

मोबाइल: 9022561824
ई-मेल: rvadhekar@gmail.com

- समीर उपाध्याय

मनहर पार्क:96/ए चोटिला:363520
जिला:सुरेंद्रनगर
गुजरात
भारत
92657 17398
S.l.upadhyay1975@gmail.com

Goonj nayi @gmail.com

शोध, साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट पत्रिका

नई गूँज

DESIGN BY RAHUL DEEWAN

Sign up at www.nayigoonj.com
9785837924